वर्ष-15, अंक-07 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 सितम्बर 2019 मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

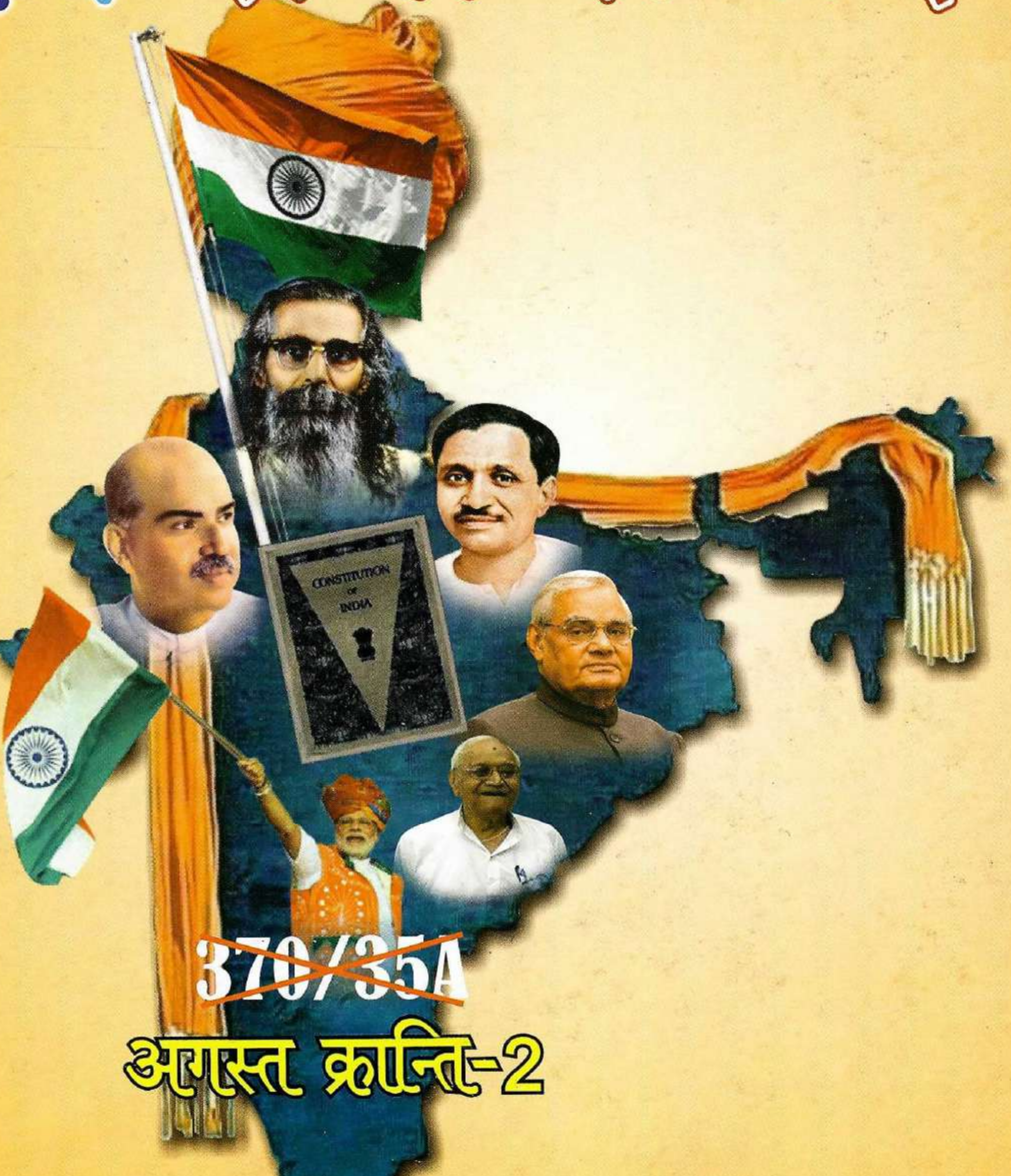

370/35A

अगस्त क्रान्ति-2

टैक्स चोरी रोकें – राजस्व बढ़ायें
प्रदेश के विकास में साझेदारी निभायें

टैक्स की चोरी आपके धन की चोरी है।

सूचना सही पाये जाने पर
शासन द्वारा प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।

क्या आपकी जानकारी में कहीं भी सरकार को देय करों जैसे–माल एवं सेवा कर, मण्डी शुल्क, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन शुल्क आदि की चोरी हो रही है अथवा बड़े पैमाने पर अवैध शराब बनाने / बिक्री या तस्करी किये जाने, अवैध रूप से बसों, वाहनों, टैक्सियों का संचालन, राशन / मिट्टी के तेल की कालाबाजारी, विद्युत चोरी, पेड़ों का अवैध कटान एवं निकासी, अवैध खनन एवं खनिजों की निकासी आदि के कृत्य किये जा रहे हैं ?

यदि हाँ, तो इसकी जानकारी तुरन्त नीचे अंकित पते पर दे सकते हैं।

आपका नाम व पता गुप्त रखा जायेगा।

निदेशक, राजस्व एवं विशिष्ट अभिसूचना

उ.प्र. सचिवालय, श्री लाल बहादुर शास्त्री भवन, लखनऊ
दूरभाष: 0522-2238408 (कार्यालय समय में)
फैक्स: 0522-2238309 ई–मेल: dri.up@nic.in

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-07 | वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 | सितम्बर 2019 | मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ0 अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।*

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	आत्मावलोकन "जल बचाओ, पेड़ लगाओ"	राजेश	6
3.	समावेशी विकास की दिशा में धारा 370 एक सार्थक कदम	एम.वैंकैया नायडू	8
4.	माननीय पीएम का राष्ट्र के नाम संबोधन		10
5.	आनन्द रूपी झरना कैसे प्रवाहित हो ?	काशीगोपाल श्रीवास्तव	16
6.	श्रद्धांजलि "श्री ओम प्रकाश जी"		18
7.	"श्रेष्ठ गोसेवक थे प्रचारक ओमप्रकाश"	समाचार	19
8.	स्वयंसेवकों के लिये प्रेरणास्रोत रहेंगे ओमप्रकाश	समाचार	19
9.	ध्येय समर्पित व्यक्तित्व के रूप में सुषमा जी की स्मृति सदा रहेगी		20
10.	श्रद्धांजलि स्व0 अरुण जेटली पंचतत्व में विलीन		26
11.	नदी की स्वच्छता हेतु प्रवेश – जल सेवक सन्त	संकलन	27
12.	सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से	अभिषेक खरे	28
13.	सच्चा जप–दीन दुःखियों की सेवा		29
14.	दादाभाई नौरोजी जीवन परिचय	संकलन	33
15.	राष्ट्रीय एकात्मता–अखंडता को पुष्ट करने वाली पहल		35
16.	हिन्दी भाषा (कविता)	गौरी शंकर वैश्य विनम्र	36
17.	मोबाइल की आदत के कारण	संकलन	37
18.	शिक्षक दिवस 5 सितम्बर	संकलन	39
19.	एकात्म मानववाद	डॉ0 आराधना पाण्डेय	40
20.	स्वास्थ्य	विजय कुमार सिंघल	42

"परोपकार करना, दूसरों की सेवा करना और उसमें जरा भी अहंकार न करना, यही सच्ची शिक्षा है"

अपनी बात

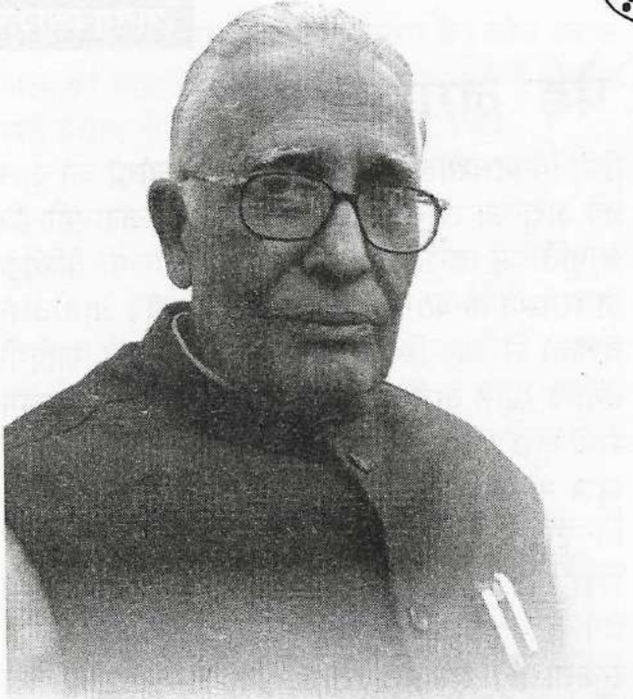

सेवा एक परम धर्म है। **सेवा हि परमो धर्मः।** सेवा द्वारा परमात्मा की प्राप्ति तथा ब्रह्म का ज्ञान होना सहज है। सेवा न अवस्था है और न व्यवस्था ही है। सेवा सहज स्वभाव है। यद्‌यपि शास्त्रों में मनुष्य के लिए निर्धारित धर्मों में सबसे कठोर धर्म सेवा को बताया गया है – **'सब ते सेवक धर्म कठोरा'** राम, भरत हनुमान और लक्ष्मण ने समाज के बीच सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया है। कहते हैं कि सेवा में कहीं कोई चूक न हो जाय इसलिए लक्ष्मण तो बारह वर्ष तक सोये ही नहीं। सेवा जड़–चेतन, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, स्त्री–पुरुष, बाल–वृद्ध, देव–दानव किसी के लिए भी हो सकती हैं। सेवा का क्षेत्र अति विशाल है। उसकी अवधि अनन्त है, उसका क्रम अखण्ड है और जो अखण्ड, अनन्त है वह परमात्मा है। इस भाव से सेवक–सेव्य में कोई अन्तर नहीं रह जाता। सेवा से ही जीवन है, व्यक्ति का कुटुम्ब का, समाज और मानव के साथ प्राणी मात्र का। अस्तु सेवा एक कल्याणकारी कर्म है।

संसार में अनेक प्रकार के कर्म हैं। एक वे जिन्हें जीव अपनी देह की आवश्यकताओं के अनुसार सहज ही करता है दूसरे प्रकार के वे कर्म हैं जिन्हें जीव अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए करता है। ये कामनाएं शारीरिक, मानसिक – आध्यात्मिक आदि कोई भी हो सकती हैं। तीसरे प्रकार के वे कर्म हैं जो दूसरों की पीड़ा से द्रवित हों, उस पीड़ा को, दुःख को दूर करने के लिए किये जाते हैं। ऐसे कर्म ही श्रेष्ठ कर्म हैं। उसे दिव्य कर्म कहा जाता है, जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाते हैं। ऐसे कर्म ही मानव शरीर की सार्थकता के द्योतक हैं। पहले दोनों प्रकार के कर्मों को तो सभी देहधारी करने को विवश हैं। किन्तु परहित में किए गये कर्म मानव देह से ही सम्भव हैं तभी तो यह कहा गया **मानव तन धन्य है, जो दूसरों के काम आया।** परमात्मा ने हमें सभी क्षमताओं से युक्त किया है। अतः हमें बिना किसी आसक्ति के, परन्तु लगन और ईमानदारी से खुद को परमात्मा के हाथ का उपकरण समझते हुए सेवा कार्य करना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक के वरिष्ठ प्रचारक मा0 ओम प्रकाश जी बाल्यकाल से ही सजग और चैतन्य रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा के साथ ही मातृभूमि की आराधना, राष्ट्र और गो–माता की सेवा में लगा दिया, इतने से भी संतोष न मिला तो मरणोपरान्त अपना देहदान मेडिकल कॉलेज लखनऊ के लिए करके अपने जीवन को 'सफल एवं सार्थक' किया। ऐसे मनीषी की मुक्ति की कामना के साथ उनके पावन दिव्य चरणों को नमन करते हुए श्रद्धांजलि स्वरूप यह अंक कीर्तिशेष ओम प्रकाश जी की पावन स्मृति में समर्पित है।

शिव

जल बचाओ, पेड़ लगाओ

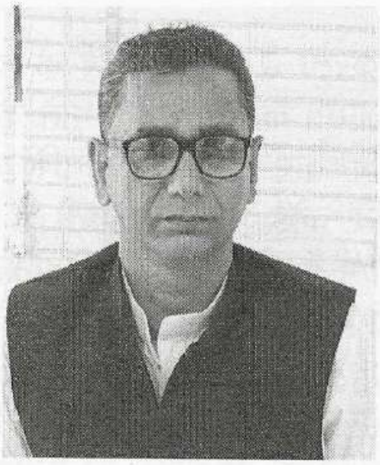

हमें अपने जीवन में जल के महत्व को समझना चाहिए और जल को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करने चाहिए। हमारी पृथ्वी का लगभग 71 प्रतिशत भाग जल से घिरा हुआ है जिसमें पीने योग्य पानी की बहुत ही कम मात्रा है। पानी को संतुलित करने का चक्र अपने आप ही चलता रहता है जैसे वर्षा और वाष्पीकरण।

जल हमें और दूसरे प्राणियों को पृथ्वी पर जीवन प्रदान करता है। जल भगवान का एक सुंदर उपहार है जो उन्होंने हमें दिया है। पृथ्वी पर जीवन को जारी रखना बहुत जरूरी है। पानी के बिना किसी भी गृह पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पृथ्वी एकमात्र ऐसा गृह है जहाँ पर आज तक जीवन और पानी दोनों विद्यमान हैं।

जल संरक्षण में अधिक कार्यक्षमता लाने के लिए सभी औद्योगिक बिल्डिगें, अपार्टमेन्टस, स्कूल, अस्पताल आदि सभी को उचित जल प्रबंधन को बढ़ावा देना चाहिए। पानी की कमी और साधारण पानी की कमी से होने वाली समस्याओं के बारे में लोगों को जागरूक करना चाहिए। लोगों द्वारा जल बर्बादी के व्यवहार को मिटाने के लिए कानूनों की बहुत जरूरत है।

गांवों के लोगों द्वारा बरसात के पानी को इकट्ठा करना आरंभ करना चाहिए। जल के उचित रख–रखाव और बरसात के पानी को इकट्ठा करने के लिए बड़े–बड़े तालाबों को बनाना चाहिए। जल संरक्षण के लिए युवा छात्रों को अधिक जागरूक होने की जरूरत है और साथ में इस मुद्दे की समस्या और समाधान पर एकाग्र होने की जरूरत है।

विकासशील देशों में रहने वाले लोगों को जल की असुरक्षा और कमी बहुत प्रभावित कर रही है। आपूर्ति से बढ़कर मांग वाले क्षेत्रों में वैश्विक जनसंख्या के 40 प्रतिशत लोग रहते हैं। आने वाले दशकों में यह स्थिति और भी खराब हो जाएगी क्योंकि आने वाले समय में जनसंख्या, कृषि, उद्योग सभी कुछ बढ़ेगा।

जल संरक्षण के उपाय : लोगों को अपने बागान या उद्यान में केवल तभी पानी देना चाहिए जब जरूरत हो। पानी को पाइप की जगह पर फुहारे से देने से बहुत अधिक मात्रा में पानी को बचाया जा सकता है। सूखा अवरोधी पौधा लगाकर भी जल संरक्षण किया जा सकता है। पाइपलाइन और नलों के जोड़ों को ठीक प्रकार से लगाना चाहिए जिससे पानी रिसकर बर्बाद न हो।

गाड़ी को धोने के लिए पाइप की जगह पर बाल्टी और मग का प्रयोग करना चाहिए जिससे पानी को बचाया जा सके।

फुहारे से नहाने की जगह पर बाल्टी का प्रयोग करना चाहिए। इस्तेमाल करने के बाद नल को बंद कर देना चाहिए जिससे पानी को बचाया जा सके। गर्मी के समय में कूलर में आवश्यकता के अनुकूल ही पानी का प्रयोग करना चाहिए।

पानी पीने के लिए छोटे ग्लास का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि ज्यादातर लोग बड़े ग्लास में पानी छोड़ देते हैं छोटे ग्लास का प्रयोग करने से पानी की बर्बादी को कम किया जा सकता है। बचे हुए पानी को पौधों में डाल देना चाहिए। फल–सब्जियों को धोने के बाद पानी को पेड़–पौधों में डाल देना चाहिए। नल को पूरा नहीं खोलना चाहिए इससे पानी ज्यादा बर्बाद होता है।

जल संरक्षण का कारण : हमारे जीवन में जल का बहुत महत्व होता है उसकी कीमत को समझना चाहिए। ऑक्सीजन, पानी और भोजन के बिना जीवन संभव नहीं है। लेकिन इन तीनों में सबसे जरूरी तत्व जल होता है। हमारी धरती पर 1

प्रतिशत से भी कम पानी पीने योग्य है। लोग स्वच्छ जल का महत्व समझना तो शुरू कर रहे हैं लेकिन उसे बचाने के लिए कोशिश नहीं करते हैं।

हर 15 सेकेण्ड में पानी से होने वाली बीमारी की वजह से एक बच्चा मर जाता है। पूरी दुनिया के लोगों में पानी की बोतलों का प्रयोग शुरू कर दिया है बहुत से देशों में लोगों को पीने के पानी के लिए बहुत लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। भारत के लोग पानी से होने वाली बीमारी से बहुत अधिक पीड़ित हैं जिसकी वजह से भारत की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही है।

धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण को पुण्यदायी कार्य बताया गया है। इसका कारण यह है कि वृक्ष धरती पर जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। भारतवर्ष में आदि काल से लोग तुलसी, पीपल, केला, बरगद आदि पेड़–पौधों को पूजते आए हैं। आज विज्ञान सिद्ध कर चुका है कि ये पेड़–पौधे हमारे लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं।

वृक्ष पृथ्वी को हरा–भरा बनाकर रखते हैं। पृथ्वी की हरीतिमा ही इसके आकर्षण का प्रमुख कारण है । जिन स्थानों में पेड़–पौधे पर्याप्त संख्या में होते हैं वहाँ निवास करना आनंददायी प्रतीत होता है । आज के आधुनिक समय में जनसंख्या वृद्धि के साथ जंगलों का विनाश बढ़ गया है। लोग नहीं जानते कि पेड़ हमारी जिंदगी हैं। पेड़ों से हमें जीवनदायिनी हवा (ऑक्सीजन) मिलती है, पेड़ों और जंगलों से हम अपनी काफी जरूरतों को पूरा कर पाते हैं। जंगलों के ही कारण बारिश होती है लेकिन तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण मानव अपनी जरूरतों के लिए अंधाधुंध जंगलों का विनाश कर रहा है। यही कारण है कि आज जंगलों का अस्तित्व खतरे में है। नतीजतन मानव जीवन खतरे में भी है। वृक्षारोपण की कमी के कारण अनमोल प्राकृतिक संपत्ति तेजी से नष्ट हो रही है। यह जीवन और पर्यावरण के संतुलन को खराब कर रहा है। पत्थरों की मांग के लिए पहाड़ों की चट्टानों को तोड़ा जा रहा है और आसपास के इलाकों में वर्षा भी कम हो रही है। आज जंगलों को अंधाधुंध रूप से काटा जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप मौसमी परिवर्तन, मिट्टी में गर्मी, ओजोन परत की कमी आदि में वृद्धि हुई है। हमारी विकास प्रक्रिया ने हजारों लोगों को पानी, जंगलों और भूमि से विस्थापित कर दिया है। इस महत्वपूर्ण स्थिति में जंगल की रक्षा करना न केवल हमारा कर्तव्य होना चाहिए बल्कि हमारा धर्म भी होना चाहिए। आइए हम सब पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने और जल संरक्षण की प्रतिज्ञा लें और जल और जंगल को बचाने में एक अमूल्य योगदान करें।

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें। पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

हमारा पता है–

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918

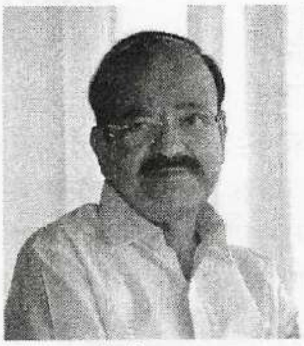

समावेशी विकास की दिशा में धारा 370 एक सार्थक कदम

एम वेंकैया नायडू

जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 खत्म करने के मोदी सरकार के फैसले ने एक देशव्यापी बहस छेड़ दी है। देश के अधिकांश लोग इस फैसले का स्वागत कर रहे हैं। वे यह भी मानते हैं है कि इसे राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए, क्योंकि यह देश की एकता–अखंडता से जुड़ा मुद्दा है। इसे राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने वाले कदम के रूप में देखा जा रहा है। इस विषय पर किसी गंभीर बहस से पहले अनुच्छेद 370 के पीछे मूल उद्देश्य को समझना जरूरी है। वास्तव में यह एक अस्थायी प्रावधान था जिसे स्थायी बनाने की कोई मंशा ही नहीं थी। यह भी एक तथ्य है कि अनुच्छेद 370 वर्ष 1952 में अमल में आया। जम्मू–कश्मीर के भारतीय संघ में विलय के समय यह अस्तित्व में नहीं था। संविधान सभा ने अक्टूबर 1949 में इसे संविधान में शामिल किया था। इसका बीड़ा सभा के सदस्य शेख अब्दुल्ला ने उठाया था। अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू–कश्मीर को अपने झंडे और अलग संविधान के साथ ही कई विशेषाधिकार भी मिले हुए थे। हालांकि इसे संविधान में शामिल कराना उतना आसान भी नहीं रहा था।

जब इसे संविधान में शामिल करने पर विचार हो रहा था तब तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को सलाह दी कि वह डॉ. भीमराव आंबेडकर को इस विषय पर मनाएं। डॉ. आंबेडकर इसके पक्ष में ही नहीं थे। 'डॉ. आंबेडकर, फ्रेमिंग ऑफ इंडियन कांस्टिट्यूशन' में लेखक डॉ. एस एन बुसी ने इस संदर्भ में डॉ. आंबेडकर के बयान का उल्लेख किया है, 'श्री अब्दुल्ला, आप चाहते हैं कि भारत कश्मीर की हर आवश्यकता की पूर्ति करें और कश्मीर को भारत में बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए, लेकिन आप यह

नहीं चाहते कि भारत सरकार या भारत के किसी नागरिक को कश्मीर में कोई अधिकार मिले। ऐसे प्रस्ताव को स्वीकृति देना भारत के हितों के साथ विश्वासघात होगा और कानून मंत्री के रूप में, मैं ऐसा कदापि नहीं करूंगा।

पंडित नेहरू ने भी 27 नवंबर, 1963 को संसद में अनुच्छेद 370 को अस्थायी प्रावधान बताते हुए कहा था कि यह काफी घिस चुका है। फिर भी इतिहास साक्षी है कि कश्मीर के लोगों को शेष भारत के निकट लाने के बजाय अनुच्छेद 370 ने इस खाई को और चौड़ा ही किया। स्वार्थी तत्वों ने सुनियोजित तरीके से इसे अंजाम दिया। अनुच्छेद 370 आम नागरिकों को कोई फायदा पहुंचाने में नाकाम रहा, वहीं अलगाववादी राज्य और शेष भारत के बीच नफरत बढ़ाने में इसका इस्तेमाल करते रहे। यह सब पड़ोसी देश की शह पर होता रहा।

अनुच्छेद 370 को हटाने की मांग लंबे समय से होती रही है। वर्ष 1964 में तो इस पर संसद में चर्चा भी हुई थी। तब इसे समाप्त करने के लिए एक निजी विधेयक को व्यापक समर्थन भी मिला था। प्रकाशवीर शास्त्री के इस प्रस्ताव को राममनोहर लोहिया और कांग्रेसी दिग्गज के. हनुमंथैया जैसे वरिष्ठ नेताओं का साथ मिला था। तब चर्चा हुई कि दलगत राजनीति से ऊपर सदस्य चाहते हैं कि

अनुच्छेद 370 को समाप्त करने के लिए कानून बने। सदन में अनुच्छेद को पूर्ण अखंडता की राह में रोड़ा माना गया। तब जिन 12 सदस्यों ने इसे हटाने का समर्थन किया उनमें सात कांग्रेस के थे। इनमें जम्मू–कश्मीर के इंदर जे. मल्होत्रा, श्यामलाल सर्राफ, समाजवादी एचवी कामथ, भाकपा के सरजू पांडेय और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद शामिल थे।

देश को लगा कि देर–सवेर इसकी विदाई हो जानी चाहिए। तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने इस पर कहा था कि 'अनुच्छेद 370, निहित प्रावधानों के बिना सिर्फ एक खोखला आवरण मात्र बचा है। इसमें अब कुछ भी नहीं रह गया है। हम इसे एक दिन में या 10 दिन में या फिर 10 महीने में समाप्त कर सकते हैं। यह पूरी तरह हम पर निर्भर करता है।'

मौजूदा सरकार और संसद अब इस फैसले पर पहुंची कि इस निर्थक प्रावधान की कोई जरूरत नहीं रही। इसीलिए इसे समाप्त कर दिया गया। यह राज्य के लोगों के जीवन सुधार में एक बड़ा अवरोध बना हुआ था। गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा में उल्लेख भी किया कि देशवासियों को मालूम होना चाहिए कि केंद्र के वे कौन से लोक कल्याणकारी कानून थे जो अनुच्छेद 370 की वजह से जम्मू–कश्मीर में लागू नहीं हो रहे थे। इसके हटने से कुल 106 केंद्रीय कानून जम्मू–कश्मीर में भी लागू हो सकेंगे। इस कड़ी में वहां भ्रष्टाचार निरोधक कानून, भूमि अधिग्रहण अधिनियम, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, शिक्षा का अधिकार कानून, 72वें और 73वें संविधान संशोधन के तहत स्थानीय निकायों के सशक्तीकरण से संबंधित कानूनों के प्रवर्तन की राह भी खुलेगी। इसी तरह अनुच्छेद 35 ए की समाप्ति से जम्मू–कश्मीर की महिलाओं के साथ दशकों से हो रहे भेदभावपूर्ण अन्याय का अंत हो गया है। भले ही उन्होंने राज्य से बाहर के किसी व्यक्ति से विवाह किया हो, लेकिन उन्हें अब संपत्ति सहित अपने अन्य अधिकारों से हाथ नहीं धोना पड़ेगा।

मेरी दृष्टि में अनुच्छेद 370 को समाप्त करना भारत की एकता–अखंडता को अक्षुण्ण रखने की दिशा में एक सही कदम है। जम्मू–कश्मीर हमेशा से भारत का अभिन्न अंग था और हमेशा रहेगा। ऐसे में इससे जुड़ा कोई भी निर्णय हमारा नितांत आंतरिक मामला है। इसमें किसी बाहरी पक्ष का हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं होगा। इस मामले में देशी–विदेशी मीडिया के एक वर्ग द्वारा किए जा रहे दुष्प्रचार के प्रति सजग रहना होगा।

अब जम्मू–कश्मीर का पूर्ण एकीकरण संभव हुआ है। संभवतः पंडित नेहरू स्वयं भी यही चाहते थे। यह एक सुधारवादी कदम है जिसका समय आ चुका था। जो आलोचक इसकी संवैधानिक प्रक्रिया पर प्रश्न उठा रहे हैं तो वे यह जान लें कि यह व्यापक चर्चा के बाद राज्यसभा में दो तिहाई और लोकसभा में 4/5 बहुमत से पारित हुआ है। मुझे विश्वास है कि यह एकीकरण लद्दाख सहित जम्मू और कश्मीर के कई वर्गों की आकांक्षाओं को पूरा करेगा। लद्दाख के सांसद 'जम्यांग शेरिंग नमग्याल' का इस संदर्भ में लोकसभा में भाषण खासा उल्लेखनीय था जिसमें उन्होंने कहा कि लद्दाख मात्र एक भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि भारत की बेशकीमती मणि है।

मुझे भरोसा है कि जम्मू–कश्मीर में हालात सुधरने के बाद उसका पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल कर दिया जाएगा। अनुच्छेद 370 को हटाना वास्तव में एक साहसी और ऐतिहासिक कदम है जो देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा, प्रगति और व्यवसाय के समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित करने के साथ शांतिपूर्ण जीवन जीने का अवसर देता है। इससे राज्य में तमाम क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर निवेश होगा। स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा और सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता के साथ जवाबदेही भी बढ़ेगी। देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने वाला यह कदम विकास में अपेक्षाकृत रूप से पिछड़ गए राज्य में नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा। वास्तव में यह स्थानीय नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारने की दिशा में पहला कदम है।

(लेखक उपराष्ट्रपति हैं)

❑

माननीय पीएम का राष्ट्र के नाम संबोधन

मेरे प्यारे देशवासियों, एक राष्ट्र के तौर पर, एक परिवार के तौर पर, आपने, हमने, पूरे देश ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया है। एक ऐसी व्यवस्था, जिसकी वजह से जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के हमारे भाई–बहन अनेक अधिकारों से वंचित थे, जो उनके विकास में बड़ी बाधा थी, वो अब दूर हो गई है। जो सपना सरदार पटेल का था, बाबा साहेब अंबेडकर का था, डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का था, अटल जी और करोड़ों देशभक्तों का था, वो अब पूरा हुआ है। जम्मू–कश्मीर और लद्दाख में एक नए युग की शुरुआत हुई है। अब देश के नागरिकों के हक भी समान हैं, दायित्व भी समान हैं। मैं जम्मू–कश्मीर के लोगों को, लद्दाख के लोगों को और प्रत्येक देशवासी की बहुत–बहुत बधाई देता हूँ।

साथियों, समाज जीवन में कुछ बातें, समय के साथ इतनी घुल–मिल जाती हैं, कि कई बार उन चीजों को स्थाई मान लिया जाता है। ये भाव आ जाता है कि, कुछ बदलेगा नहीं, ऐसे ही चलेगा। अनुच्छेद 370 के साथ ही ऐसा ही भाव था। उससे जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के हमारे भाई–बहनों की, हमारे बच्चों की जो हानि हो रही थी, उसकी चर्चा ही नहीं होती थी। हैरानी की बात ये है कि आप किसी से भी बात करें, तो कोई ये भी नहीं बता पाता था कि अनुच्छेद 370 से जम्मू–कश्मीर के लोगों के जीवन में क्या लाभ हुआ।

भाइयों और बहनों, अनुच्छेद 370 और 35–ए ने जम्मू–कश्मीर को अलगाववाद–आतंकवाद परिवारवाद और व्यवस्थाओं में बड़े पैमाने पर फैले भ्रष्टाचार के अलावा कुछ नहीं दिया। इन दोनों अनुच्छेद का देश के खिलाफ, कुछ लोगों की भावनाएं भड़काने के लिए पाकिस्तान द्वारा एक शस्त्र के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा था।

इसकी वजह से पिछले तीन दशक में लगभग 42 हजार निर्दोष लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी, जम्मू–कश्मीर और लद्दाख का विकास उस गति से नहीं हो पाया, जिसका वो हकदार था।

अब व्यवस्था की ये कमी दूर होने से जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के लोगों का वर्तमान तो सुधरेगा ही, उनका भविष्य भी सुरक्षित होगा।

साथियों, हमारे देश में कोई भी सरकार हो, वो संसद में कानून बनाकर, देश की भलाई के लिए काम करती है। किसी भी दल की सरकार हो, किसी भी गठबंधन की सरकार हो, ये कार्य निरंतर चलता रहता है। कानून बनाते समय काफी बहस होती है, चिंतन मनन होता है, उसकी आवश्यकता, उसके प्रभाव को लेकर गंभीर पक्ष रखे जाते हैं। इस प्रक्रिया से गुजरकर जो कानून बनता है, वो पूरे देश के लोगों का भला करता है। लेकिन इस कल्पना नहीं कर सकता कि संसद इतनी बड़ी संख्या में कानून बनाए और वो देश के एक हिस्से में लागू ही नहीं हों। यहां तक कि पहले की जो सरकारें, एक कानून बनाकर वाहवाही लूटती थीं। वो भी ये दावा नहीं कर पाती थीं कि उनका बनाया कानून जम्मू कश्मीर में भी लागू होगा। जो कानून देश की पूरी आबादी के लिए बनता था, उसके लाभ से जम्मू–कश्मीर के डेढ़ करोड़ से ज्यादा लोग वंचित रह जाते थे। सोचिए, देश के अन्य राज्यों में बच्चों को शिक्षा का अधिकार है, लेकिन जम्मू–कश्मीर के बच्चे इससे वंचित थे। देश के अन्य राज्यों में बेटियों को जो सारे हक मिलते हैं, वो सारे हक जम्मू–कश्मीर की बेटियों को नहीं मिलते थे। देश के अन्य राज्यों में सफाई कर्मचारी के लिए सफाई कर्मचारी एक्ट लागू हैं, लेकिन जम्मू–कश्मीर के सफाई कर्मचारी इससे वंचित थे। देश के अन्य राज्यों में दलितों पर अत्याचार रोकने के लिए सख्त कानून लागू हैं, लेकिन जम्मू–कश्मीर में ऐसा नहीं था। देश के अन्य

राज्यों में श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए Minimum Wages (वेजेस) Act लागू है, लेकिन जम्मू–कश्मीर में काम करने वाले श्रमिकों को ये सिर्फ कागजों पर ही मिलता था। देश के अन्य राज्यों में चुनाव लड़ते समय अनुसूचित जनजाति के भाई–बहनों को आरक्षण का लाभ मिलता था, लेकिन जम्मू–कश्मीर में ऐसा नहीं था।

साथियों, अब आर्टिकल 370 और 35–ए, इतिहास की बात हो जाने के बाद, उसके नकारात्मक प्रभावों से भी जम्मू–कश्मीर जल्द बाहर निकलेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

भाइयों और बहनों, नई व्यवस्था में केन्द्र सरकार की ये प्राथमिकता रहेगी कि राज्य के कर्मचारियों को, जम्मू–कश्मीर पुलिस को, दूसरे केन्द्र शासित प्रदेश के कर्मचारियों और वहां की पुलिस के बराबर सुवधाएं मिलें। अभी केन्द्र शासित प्रदेशों में, अनेक ऐसी वित्तीय सुविधायें जैसे LTC, House Rent Allowance, बच्चों की शिक्षा के लिए Education Allowance, हेल्थ स्कीम, जैसी सुविधाएं दी जाती हैं, जिसमें से अधिकांश जम्मू–कश्मीर के कर्मचारियों को नहीं मिलती। ऐसी सुविधाओं का Review कराकर, जल्द ही जम्मू–कश्मीर के कर्मचारियों और वहां की पुलिस को भी ये सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी।

साथियों, बहुत जल्द ही जम्मू–कश्मीर और लद्दाख में सभी केन्द्रीय और राज्य के रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

इससे स्थानीय नौजवानों को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होंगे। साथ ही केन्द्र सरकार की पब्लिक सेक्टर यूनिट्स और प्राइवेट सेक्टर की बड़ी कम्पनियों को भी रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराने के लिए, प्रोत्साहन किया जाएगा। इसके अलावा, सेना और अर्धसैनिक बलों द्वारा, स्थानीय युवाओं की भर्ती के लिए रैलियों का आयोजन किया जाएगा। सरकार द्वारा प्रधानमंत्री स्कॉलरशिप योजना का भी विस्तार किया जाएगा ताकि ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके। जम्मू–कश्मीर में राजस्व घाटा भी बहुत ज्यादा है। केन्द्र सरकार ये भी सुनिश्चित करेगी कि इसके प्रभाव को कम किया जाए।

भाइयों और बहनों, केन्द्र सरकार ने अनुच्छेद 370 हटाने के साथ ही, अभी कुछ कालखंड के लिए जम्मू–कश्मीर को सीधे केन्द्र सरकार के शासन में रखने का फैसला बहुत सोच–समझकर लिया है। इसके पीछे की वजह समझना भी आपके लिए महत्वपूर्ण है। जब से वहां गवर्नर रूल लगा है, जम्मू–कश्मीर का प्रशासन, सीधे केन्द्र के सम्पर्क में है। इसकी वजह से बीते कुछ महीनों में वहां Good Governance और Development का और बेहतर प्रभाव जमीन पर दिखाई देने लगा है। जो योजनाएं पहले सिर्फ कागजों में रह गईं थीं उन्हें अब जमीन पर उतारा जा रहा है। दशकों से लटके हुए प्रोजेक्ट्स को नई गति मिली है। हमने जम्मू–कश्मीर प्रशासन में एक नई कार्यसंस्कृति लाने, पारदर्शिता लाने का प्रयास किया है। इसी का नतीजा है कि IIT, IIM एम्स हो, तमाम इरिगेशन प्रोजेक्ट्स हों, पावर प्रोजेक्ट्स हों, या फिर एंटी करप्शन ब्यूरो, इन सबके काम मे तेजी आई है। इसके अलावा वहां कनेक्टिविटी से जुड़े प्रोजेक्ट हों, सड़कों और नई रेल लाइनों का काम हो, एयरपोर्ट का आधुनिकीकरण हो, सभी को तेज गति से आगे बढ़ाया जा रहा है।

साथियों, हमारे देश का लोकतंत्र इतना मजबूत है, लेकिन आप ये जानकर चौंक जाएंगे कि जम्मू–कश्मीर में दशकों से, हजारों की संख्या में ऐसे भाई–बहन रहते हैं, जिन्हें लोकसभा के चुनाव में वोट डालने का अधिकार था, लेकिन वो विधानसभा और स्थानीय निकाय के चुनाव में मतदान नहीं कर सकते थे। ये वही लोग हैं जो 1947 में बंटवारे के बाद पाकिस्तान से भारत आए थे। क्या इन लोगों के साथ अन्याय ऐसे ही चलता रहता?

साथियों, जम्मू–कश्मीर के अपने भाई बहनों को मैं एक महत्वपूर्ण बात और स्पष्ट करना चाहता हूँ। आपका जनप्रतिनिधि आपके द्वारा ही चुना जाएगा, आपके बीच से ही आयेगा। जैसे पहले

MLA होते थे, वैसे ही MLA आगे भी होंगे। जैसे पहले मंत्रिपरिषद आगे भी होगी। जैसे पहले आपके सीएम होते थे, वैसे ही आगे भी आपके सीएम होंगे।

साथियों, मुझे पूरा विश्वास है कि इस नई व्यवस्था के तहत हम सब मिलकर आतंकवाद–अलगाववाद से जम्मू–कश्मीर को मुक्त कराएंगे। जब धरती का स्वर्ग, हमारा जम्मू–कश्मीर फिर एक बार विकास की नई ऊँचाइयों को पार करके पूरे विश्व को आकर्षित करने लगेगा, नागरिकों के जीवन में Ease of Living बढ़ेगी, नागरिकों को जो उनके हक का मिलना चाहिए, वो बेरोक–टोक मिलने लगेगा, शासन–प्रशासन की सारी व्यवस्थाएं जनहित कार्यों को तेजी से आगे बढ़ाएंगी, तो मैं नहीं मानता कि केन्द्र शासित प्रदेश की व्यवस्था जम्मू–कश्मीर के अंदर चलाए रखने की जरूरत पड़ेगी।

भाइयों और बहनों, हम सभी चाहते हैं कि आने वाले समय में जम्मू–कश्मीर विधानसभा के चुनाव हों, नई सरकार बने, मुख्यमंत्री बनें। मैं जम्मू–कश्मीर के लोगों को भरोसा देता हूँ कि आपको बहुत ईमानदारी के साथ, पूरे पारदर्शी वातावरण में अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर मिलेगा। जैसे बीते दिनों पंचायत के चुनाव पारदर्शिता के साथ सम्पन्न कराए गए, वैसे ही जम्मू–कश्मीर विधानसभा के भी चुनाव होंगे। मैं राज्य के गर्वनर से ये भी आग्रह करूंगा कि ब्लॉक डवलपमेंट काउंसिल का गठन, जो पिछले दो तीन दशकों से लंबित है, उसे पूरा करने का काम भी जल्द से जल्द किया जाए।

साथियों, ये मेरा खुद का अनुभव है कि चार–पाँच महीने पहले जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के पंचायत चुनावों में जो लोग चुनकर आए, वो बहुत बेहतरीन काम कर रहे हैं। कुछ महीनों पहले जब मैं श्रीनगर गया था, तो वहां मेरी उनसे लंबी मुलाकात भी हुई थी। जब वो दिल्ली आए थे, तब भी मेरे घर पर, मैनें उनसे काफी देर तक बात की थी। पंचायत के इन साथियों की वजह से जम्मू–कश्मीर में बीते दिनों ग्रामीण स्तर पर बहुत तेजी से काम हुआ है। हर घर में बिजली पहुंचाने का काम हो या फिर राज्य को ODF बनाना हो, इसमें पंचायत के प्रतिनिधियों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि अब अनुच्छेद 370 हटने के बाद, जब इन पंचायत सदस्यों को नई व्यवस्था में काम करने का मौका मिलेगा तो वो कमाल कर देंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि जम्मू–कश्मीर की जनता Good Governance और पारदर्शिता के वातावरण में, नए उत्साह के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेगी। साथियों, दशकों के परिवारवाद ने जम्मू–कश्मीर के मेरे युवाओं को नेतृत्व करेंगे और उसे नई ऊँचाइयों पर ले जायेंगे। मैं जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के नौजवानों, वहां की बहनों–बेटियों से विशेष आग्रह करूंगा कि अपने क्षेत्र के विकास की कमान खुद संभालिए। साथियों, जम्मू–कश्मीर और लद्दाख में दुनिया का सबसे बड़ा टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनने की क्षमता है। इसके लिए जो वातावरण चाहिए, शासन प्रशासन में जो बदलाव चाहिए, वो किए जा रहे हैं लेकिन मुझे इसमें हर देशवासी का साथ चाहिए। एक जमाना था, जब बॉलीवुड की फिल्मों की शूटिंग के लिए कश्मीर पसंदीदा जगह थी। उस दौरान शायद ही कोई फिल्म बनती हो, जिसकी कश्मीर में शूटिंग न होती हो। अब जम्मू–कश्मीर में स्थितियां सामान्य होंगी, तो देश ही नहीं, दुनिया भर के लोग वहां फिल्मों की शूटिंग करने आएंगे। हर फिल्म अपने साथ कश्मीर के लोगों के लिए रोजगार के अनेक अवसर भी लेकर आएगी। मैं हिंदी फिल्म इंडस्ट्री, तेलगू और तमिल फिल्म इंडस्ट्री और इससे जुड़े लोगों से आग्रह करूंगा कि जम्मू–कश्मीर और लद्दाख में निवेश के बारे में, फिल्म की शूटिंग से लेकर थिएटर और अन्य साधनों की स्थापना के बारे में जरूर सोचें। जो टेक्नोलॉजी की दुनिया से जुड़े लोग हैं, चाहे वो प्रशासन में हों या फिर प्राइवेट सेक्टर में, उनसे भी मेरा आग्रह है कि अपनी नीतियों में, अपने फैसलों में इस बात को प्राथमिकता दें कि जम्मू–कश्मीर में कैसे टेक्नोलॉजी का और विस्तार किया जाए। जब वहां डिजिटल कम्युनिकेशन को ताकत मिलेगी, जब वहां BPO सेंटर, कॉमन सर्विस सेंटर बढ़ेंगे, जितना ज्यादा टेक्नोलॉजी का विस्तार होगा, उतना

ही जम्मू–कश्मीर के हमारे भाई–बहनों का जीवन आसान होगा, उनकी आजीविका और रोजी–रोटी कमाने के अवसर बढ़ेंगे।

साथियों, सरकार ने जो फैसला लिया है, वो जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के उन नौजवानों को भी मदद करेगा, जो स्पोर्ट्स की दुनियां में आगे बढ़ना चाहते हैं। नई स्पोर्ट्स एकैडमीज़, नए स्पोर्ट्स स्टेडियम, साइंटिफिक इनवायर्नमेंट में ट्रेनिंग, उन्हें दुनिया में अपना टैलेंट दिखाने में मदद करेगी। साथियों, जम्मू–कश्मीर के केसर का रंग हो या कहवा का स्वाद, सेब का मीठापन हो या खुबानी का रसीलापन, कश्मीरी शॉल हो या फिर कलाकृतियां, लद्दाख के ऑर्गेनिक प्रॉडक्ट्स हों या फिर हर्बल मेडिसिन इसका प्रसार दुनिया भर में किए जाने की जरूरत है। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। लद्दाख में सोलो नाम का एक पौधा पाया जाता है। जानकारों का कहना है कि ये पौधा, High Altitude पर रहने वाले लोगों के लिए, बर्फीली पहाड़ियों पर तैनात सुरक्षाबलों के लिए संजीवनी का काम करता है। कम ऑक्सीजन वाली जगह पर शरीर के इम्यून सिस्टम को संभाले रखने में इसकी बहुत बड़ी भूमिका है। सोचिए, ऐसी अद्भुत चीज, दुनिया भर में बिकनी चाहिए या नहीं ? कौन हिन्दुस्तानी नहीं चाहता है और साथियों मैनें सिर्फ एक का नाम लिया है। ऐसे अनगिनत पौधे, हर्बल प्रॉडक्ट जम्मू–कश्मीर और लद्दाख में बिखरे पड़े हैं। उनकी पहचान होगी, उनकी बिक्री होगी तो इसका बहुत बड़ा लाभ वहां के लोगों को मिलेगा, वहां के किसानों को मिलेगा। इसलिए मैं देश के उद्यमियों से, Export से जुड़े लोगों से, फूड प्रोसेसिंग सेक्टर से जुड़े लोगों से आग्रह करूंगा कि जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के स्थानीय Products को दुनिया भर में पहुंचाने के लिए आगे आयें।

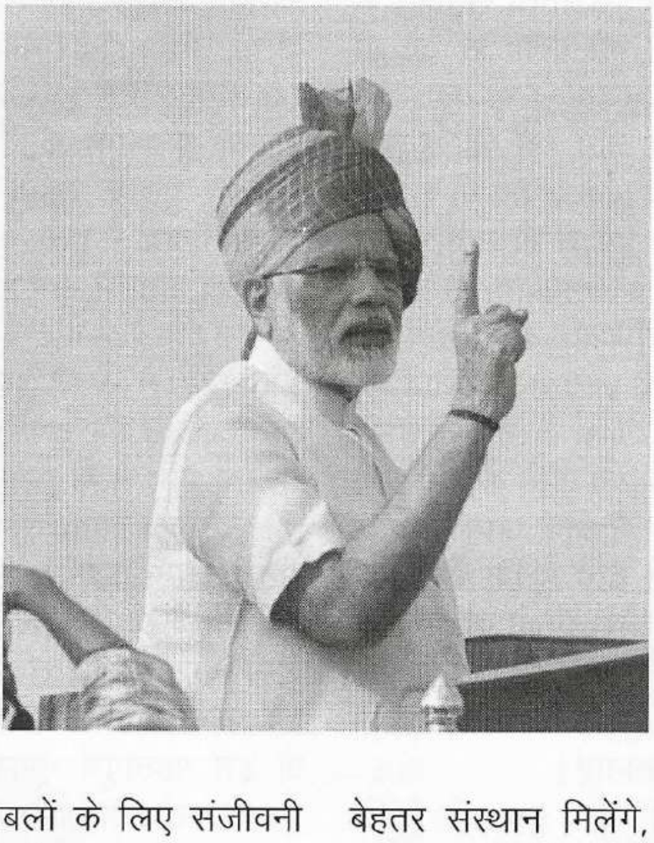

साथियों, Union Territory बन जाने के बाद अब लद्दाख के लोगों का विकास, भारत सरकार की स्वाभाविक जिम्मेदारी बनता है। स्थानीय प्रतिनिधियों, लद्दाख और कारगिल की डवलपमेंट काउंसिल्स के सहयोग से केन्द्र सरकार, विकास की तमाम योजनाओं का लाभ अब और तेजी से पहुंचाएगी। लद्दाख में स्पीरिचुअल टूरिज्म, एडवेंचर टूरिज्म और इकोटूरिज्म का, सबसे बड़ा केन्द्र बनने की क्षमता है। सोलर पावर जनरेशन का भी लद्दाख बहुत बड़ा केन्द्र बन सकता है। अब वहां के सामर्थ्य का उचित इस्तेमाल होगा और बिना भेदभाव विकास के लिए नए अवसर बनेंगे। अब लद्दाख के नौजवानों की इनोवेटिव स्पिरिट को बढ़ावा मिलेगा, उन्हें अच्छी शिक्षा के लिए बेहतर संस्थान मिलेंगे, वहां के लोगों को अच्छे अस्पताल मिलेंगे, इंफ्रास्ट्रक्चर का और तेजी से आधुनिकीकरण होगा।

साथियों, लोकतंत्र में ये भी बहुत स्वाभाविक है कि कुछ लोग इस फैसले के पक्ष में हैं और कुछ को इस पर मतभेद है। मैं उनके मतभेद का भी सम्मान करता हूँ और उनकी आपत्तियों का भी। इस पर जो बहस हो रही है, उसका केन्द्र सरकार जवाब भी दे रही है। समाधान करने का प्रयास भी कर रही है। ये हमारा लोकतांत्रिक दायित्व है। लेकिन मेरा उनसे ये आग्रह है कि वो देशहित को सर्वोपरि रखते हुए व्यवहार करें और जम्मू–कश्मीर–लद्दाख को नई

दिशा देने में सरकार की मदद करें। देश की मदद करें। संसद में किसने मतदान किया, किसने नहीं किया, किसने समर्थन दिया, किसने नहीं दिया, इससे आगे बढ़कर अब हमें जम्मू–कश्मीर–लद्दाख हित में मिलकर, एकजुट होकर काम करना है। मैं हर देशवासी को ये भी कहना चाहता हूं कि जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के लोगों की चिंता हम सबकी चिंता है, 130 करोड़ नागरिकों की चिंता है, उनके सुख–दुःख, उनकी तकलीफ से हम अलग नहीं हैं। अनुच्छेद 370 से मुक्ति एक सच्चाई है, लेकिन सच्चाई ये भी है कि इस समय ऐतिहात के तौर पर उठाए गए कदमों की वजह से जो भी परेशानी हो रही है, उसका मुकाबला भी वही लोग कर रहे हैं। कुछ मुट्ठी भर लोग, जो वहां हालात बिगाड़ना चाहते हैं, उन्हें धैर्यपूर्वक जवाब भी वहां के हमारे भाई बहन दे रहे हैं। हमें ये भी नहीं भूलना चाहिए कि आतंकवाद और अलगाववाद को बढ़ावा देने की पाकिस्तानी साजिशों के विरोध में जम्मू–कश्मीर के ही देशभक्त लोग डटकर खड़े हुए हैं। भारतीय संविधान पर विश्वास करने वाले हमारे ये सभी भाई–बहन अच्छा जीवन जीने के अधिकारी हैं। हमें उन सब पर गर्व है। मैं आज जम्मू–कश्मीर के इन साथियों को भरोसा देता हूँ कि धीरे–धीरे हालात सामान्य हो जाएंगे और उनकी परेशानी भी कम होती चली जाएगी। साथियों, ईद का मुबारक त्यौहार भी नजदीक ही है। ईद के लिए मेरी ओर से सभी को बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

सरकार इस बात का ध्यान रख रही है कि जम्मू–कश्मीर में ईद मानने में लोगों को कोई परेशानी न हो। जो साथी जम्मू–कश्मीर से बाहर रहते हैं और ईद पर अपने घर वापस जाना चाहते हैं, उनको भी सरकार हर संभव मदद कर रही है। साथियों, आज इस अवसर पर, मैं, जम्मू–कश्मीर के लोगों की सुरक्षा में तैनात अपने सुरक्षा बलों के साथियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ। प्रशासन से जुड़े सभी लोग, राज्य के कर्मचारी और जम्मू–कश्मीर पुलिस जिस तरह से स्थितियों को संभाल रही है, वो बहुत बहुत प्रशंसनीय है। आपके इस परिश्रम ने, मेरा ये विश्वास और बढ़ाया है, बदलाव हो सकता है।

भाइयों और बहनों, जम्मू–कश्मीर हमारे देश का मुकुट है। गर्व करते हैं इसकी रक्षा के लिए जम्मू–कश्मीर के अनेकों वीर बेटे–बेटियों ने अपना बलिदान दिया है, अपना जीवन दांव पे लगाया है। पुंछ जिले के मौलवी गुलाम दीन, जिन्होंने 65 की लड़ाई में पाकिस्तानी घुसपैठियों के बारे में भारतीय सेना को बताया था, उन्हें अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था, लद्दाख के कर्नल सोनम वानचुंग जिन्होंने कारगिल की लड़ाई में दुश्मन को धूल चटा दी थी, उन्हें महावीर चक्र दिया गया था, राजौरी की रुखसाना कौसर, जिन्होंने एक बड़े आतंकी को मार गिराया था, उन्हें कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया था, पुंछ के शहीद औरंगजेब, जिसकी पिछले वर्ष आतंकियों ने हत्या कर दी थी और जिनके दोनों भाई अब सेना में भर्ती होकर देश की सेवा कर रहे हैं। ऐसे वीर बेटे–बेटियों की ये लिस्ट बहुत लंबी है। आतंकियों से लड़ते हुए जम्मू–कश्मीर पुलिस के अनेक जवान और अफसर भी शहीद हुए हैं। देश के अन्य भू भाग से भी हज़ारों लोगों को हमने खोया है इन सभी का सपना रहा है – एक शांत, सुरक्षित, समृद्ध जम्मू–कश्मीर बनाने का। उनके सपने को हमें मिलकर पूरा करना है। साथियों ये फैसला जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के साथ ही पूरे भारत की आर्थिक प्रगति में सहयोग करेगा। जब दुनिया के इस महत्वपूर्ण भूभाग में शांति और खुशहाली आएगी, तो स्वाभाविक रूप से विश्व शांति के प्रयासों को मजबूती मिलेगी। मैं जम्मू–कश्मीर के अपने भाइयों और बहनों से, लद्दाख के अपने भाइयों और बहनों से, आह्वान करता हूँ आइए, हम सब मिलकर दुनिया को दिखा दें कि इस क्षेत्र के लोगों का सामर्थ्य कितना ज्यादा है, यहां के लोगों का हौसला, उनका जज्बा कितना ज्यादा है। आइए, हम सब मिलकर नए भारत के साथ–साथ अब नए जम्मू–कश्मीर और नए लद्दाख का भी निर्माण करें।

बहुत–बहुत धन्यवाद !

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2019 से 31 जुलाई 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह जून 2019 में लाभान्वित रोगी	माह जुलाई 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	116	71	187
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	458	244	702
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	218	71	289
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	150	52	202
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	88	27	115
	कुल लाभान्वित रोगी		**1030**	**465**	**1495**

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	1782	888	2670
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	1309	501	1810
	कुल लाभान्वित रोगी संख्या		**3091**	**1389**	**4480**

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	**1027**	**360**	**1387**

1 अप्रैल 2019 से 31 जुलाई 2019 तक कुल लाभान्वित रोगी सं. 5867

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह जून 2019 तक	माह जुलाई 2019 में	योग सत्र 19–20
1.	उत्तर प्रदेश	16640	5640	22280
2.	उत्तराखण्ड	162	78	240
3.	बिहार	11815	4286	16101
4.	झारखण्ड	1911	481	2392
5.	उड़ीसा	203	02	205
6.	मध्य प्रदेश	638	400	1038
7.	छत्तीसगढ़	114	58	182
8.	राजस्थान/गुजरात	00	22	22
9.	महाराष्ट्र	00	00	00
10.	नेपाल	131	121	252
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	00	132	32
12.	पश्चिम बंगाल	342	130	472
13.	अन्य प्रान्त	187	65	252
	योग	**32143**	**11415**	**43468**

अन्त्योदय हेल्थ मिशन, नेत्र कुम्भ चिकित्सालय, सी-136, निराला नगर, लखनऊ

1 अप्रैल 2019 से 31 जुलाई 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

	माह जून 2019 तक	माह जुलाई 2019 में	योग सत्र 19–20
नेत्र परीक्षण	**922**	**217**	**1139**
चश्मा वितरण	**547**	**128**	**675**

आनन्द रूपी झरना कैसे प्रवाहित हो ?

काशीगोपाल श्रीवास्तव

सांसारिक मोह बन्धनो से मुक्त हुए बिना किसी व्यक्ति के अंदर आनन्द रूपी झरने का सतत प्रवाहित होना संभव नही है। जहां तक सांसारिकता से मुक्त होने का सवाल है तो यह कार्य सरल नही है। व्यक्ति की सांसारिकता से मुक्ति राम की भक्ति में तन्मयता से संभव है। किसी घटना विशेष से मन पर चोट पड़ने से भी व्यक्ति का सांसारिकता से मोह भंग हो जाता है और वह राम की भक्ति में लग जाता है।

संत कबीर ने सांसारिकता से मुक्ति राम से गहरे लगाव और उनकी (राम की) भक्ति रूपी सागर में गोता लगाने से पाई। उनके अंदर आनंद रूपी झरना प्रवाहित होने लगा। इस कारण उनको गरीबी में सुख अनुभव होने लगा। अमीरी की चाह समाप्त हो गई। इसकी अभिव्यक्ति सुंदर तरीके से उनकी कविता के माध्यम से सामने आई। **मन लागो मेरो यार फकीरी में, जो सुख पाऊं राम भजन में। वह सुख नाहीं अमीरी में, मन लागो मेरो यार फकीरी में।**

प्रभु राम से लगाव या प्रभु राम से जोड़ने के लिए कोई भी बात निमित्त बन सकती है । प्रख्यात दार्शनिक आचार्य रजनीश ओशो अपने एक लेख में लिखते हैं –**"दूर जंगल में पपीहा 'पी कहां", 'पी कहां"** की पुकार लगा रहा है। नानक ने सुना तो उन पर चोट पड़ गई। पपीहा ही सदगुरु बन गया। एक पपीहा ने भर दी नानक के सुखों की झोली। याद आ गई पिया की। वह प्रभु की रट लगाने लगे। मां ने समझा नानक पागल हो गया है। वह बोली क्या रट लगा रखी है। नानक ने कहा जब तक पपीहा चुप न हो जाए, मैं कैसे चुप हो सकता हूं, तो नानक की झोली पपीहे के कारण ही भर गई। वह निमित्त हो गया। निमित्त कुछ भी हो सकता है। पपीहे ने आवाज दी, नानक ने सुन ली। जन्म जन्म की स्मृति जाग गई। "आंखों से आंसू और अंदर आनंद रूपी झरना प्रवाहित होने लगा।

राजा शुद्धोदन और माया देवी के बेटे सिद्धार्थ के मन पर चोट पड़ी और वह सांसारिकता से मुक्त हो गए। कैसे चोट पड़ी ? एक दिन राजकुमार सिद्धार्थ नगर परिभ्रमण के लिए रथ पर बैठ कर निकले। उन्होंने एक दिन एक रोगी को, दूसरे दिन एक वृद्ध को, तीसरे दिन एक मृत को और चौथे दिन एक सन्यासी को देखा। उन्हें बताया गया कि प्रथम तीनों दृश्य विरले नहीं हैं क्योंकि समस्त जीवित प्राणियों की यह अवश्यम्भावी नियति है। उनके मन पर चोट पड़ी। वह विचलित हो गए और गहनचिंतन में डूब गए। उन्होंने सत्य की खोज करने के लिए संसार का त्याग करने का निर्णय ले लिया और वह एक रात अपने माता–पिता, सुंदर पत्नी यशोधरा और नवजात बेटे राहुल को छोड़कर महल से निकल गए। छह वर्षों की कठोर साधना के उपरांत उन्हें चिरवांछित ज्ञान प्राप्त हुआ और वे बोधिसत्व हो गए। उनके अंदर आनंद रूपी झरना प्रवाहित होने लगा सिद्धार्थ अब बुद्ध के नाम से जाने जाने लगे।

संस्कृत में महान धार्मिक ग्रंथ रामायण के रचयिता वाल्मीकि का पहला नाम रत्नाकर था। वह अपने साथियों के साथ घने जंगल से गुजरने वाले लोगों को मारने और लूटने का काम करता था। एक बार इसी जंगल से गुजरते हुए देवर्षि नारदजी से उसका सामना हो गया। उन्होंने कहा रत्नाकर तुम लोगों को मारने और लूटने का कार्य कर जो पाप कर रहे हो, क्या इस पाप में तुम्हारे माता–पिता और पत्नी भी शामिल है ? रत्नाकर बोला– क्यों नहीं शामिल होंगे। मैं यह पाप उनके लिए भी तो कर रहा हूं।

देवर्षि नारदजी बोले–"रत्नाकर मैं तुम्हारे कहने से नहीं मानता। तुम घर जाकर और घर वालों से पूछ कर आओ कि क्या वे तुम्हारे पाप में भागीदार हैं ? रत्नाकर देवर्षि नारदजी को एक पेड़ से बांधकर घर चल दिया।

घर जाकर उसने पहले पिता से कहा–"मैं लोगो को मारने और लूटने का कार्य कर आपका पालन पोषण कर रहा हूँ। ऐसा कर मैं एक पाप कर रहा हूँ। क्या आप मेरे इस पाप में भागीदार हैं ? "पिता गुस्से से बोले–"नीच! पापी!! तू मेरा पुत्र होकर यह पापकृत्य करता है। दूर हटजा मेरे सामने से, और अब मुझे अपना काला मुंह न दिखाना।" अब रत्नाकर अपनी माँ के पास पहुंचा और उसने माँ से वही बात कही जो उसने अपने पिता से कही थी। यह सुनकर माँ बोली–"मैं क्यों तुम्हारे पाप का भाग गृहण करूँ।" इसके बाद रत्नाकर ने अपनी पत्नी से भी पाप में भागीदार होने की बात पूछी तो उसने भी मना कर दिया। वह बोली–स्वामी मैं आपके सुख दुख में तो भागीदार हूँ, पर पाप में नही हूँ।'

रत्नाकर दुखी और निराश होकर देवर्षि नारदजी के पास आया। रत्नाकर नारदजी को बंधन से मुक्त कर बोला–"देवर्षि मैं बिल्कुल अकेला हो गया हूँ।' यह कहकर वह देवर्षि नारदजी के पैरों पर झुक गया। नारद जी बोले–"रत्नाकर तुम दुखी और निराश मत हो, जो हो गया उसे भूल जाओ। तुम अपने पुरुषार्थ से अपने लिए नए संसार की रचना करो तुम राम नाम जपना प्रारंभ कर दो।" यह सुनकर रत्नाकर सघन अरण्यप्रदेश में साधना करने चला गया। वह राम–राम की रट लगाते हुए राम की भक्ति रूपी सागर में गोता लगाने लगा। ऐसा गोता जिसमें वह भूल गया कि वह राम राम जपने की बजाय मरा–मरा जप रहा है। ऐसा जाप करने पर भी उसके अंदर आनंद रूपी झरना प्रवाहित होने लगा। अनेक वर्षों की कठोर साधना के कारण रत्नाकर के सारे पाप नष्ट हो गए और उनका नाम वाल्मीकि हो गया। देवर्षि नारद कुख्यात डाकू रत्नाकर को राम भक्त वाल्मीकि बनाने में निमित्त बन गए।

कहा जाता है कि एक घटना के कारण महर्षि वाल्मीकि के मुंह से संस्कृत में एक श्लोक निकल गया। उनके हृदय में काव्य सरिता बहने लगी। उनको आश्चर्य हुआ तभी उनको एक वाणी सुनाई दी। "वत्स ! डरो मत, लोक कल्याण के लिए ऐसे ही काव्यमय भाषा में राम के चरित्र का वर्णन करो।" यह वाणी सुनने के बाद महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत में महाकाव्य रामायण की रचना की। वह इस महान धार्मिक ग्रंथ के रचयिता के रूप में हमेशा याद किए जाते रहेंगे।

तुलसीदास के मन पर अपनी पत्नी रत्नावली की धिक्कार सुनकर चोट लगी और वह एक क्षण भी रुके बिना राम भक्ति रूपी सागर में गोता लगाने निकल पड़े। ऐसा गोता लगाया कि उनके अंदर आनंद रूपी झरना प्रवाहित होने लगा। तुलसीदास जी की राम भक्ति सागर में गहरा गोता लगाने के कारण हनुमान जी को इनकी (तुलसीदासजी की) प्रार्थना पर इनको प्रभु राम के दर्शन कराने के लिए विवश होना पड़ा। चित्रकूट में प्रभु राम के दर्शन पाकर तुलसीदासजी के अंदर आनंद रूपी झरने का प्रवाह अवर्णनीय हो गया।

सांसारिकता का तात्पर्य संसार से विमुख अथवा संसार से भागना नहीं है। किसी का यह कथन कि **'संसार से भागे फिरते हो' भगवान को क्या तुम पाओगे ?** सत्य है। संसार में रहकर, सांसारिक क्रिया कलापों को करते हुए प्रेम पूर्वक संसार के विविध प्राणियों में ही परमात्मा का स्वरूप दर्शन करते हुए उनकी सेवा में लगे रहना, कर्तव्य पालन में आनन्दाभूति करना भी आनन्दस्रोत को प्रवाहित करता है।

स्वतंत्र लेखक
824 सी शाहपुरा भोपाल
मो.न. 8989206856

❑

श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारककीर्ति शेष ओमप्रकाश जी का दिनांक 04 अगस्त 2019 दिन, रविवार को प्रातः किंग जार्ज मेडिकल कालेज में निधन हो गया। हरियाणा में 19 जुलाई 1927 को जन्में और मथुरा में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त कर ओम प्रकाश जी 1947 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अतरौली के तहसील प्रचारक बने श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाईजी' से बाल स्वयं सेवक के रूप में परिचय में आये। कालान्तर में जिला प्रचारक विभाग प्रचारक, प्रान्त प्रचारक, क्षेत्र प्रचारक होने के साथ ही वह अखिल भारतीय गो–सेवा प्रमुख भी रहे तथा भाऊराव देवरस सेवा न्यास के संस्थापक न्यासी रहे। उनके मन में भारतीय सनातन संस्कृति, धर्म के पवित्र प्रतीकों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव था। जीवनपर्यन्त राष्ट्र की सेवा करते रहे, मरणोपरान्त उनका देहदान किंग जार्ज मेडिकल कालेज को किया गया जिसके पीछे राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा भावना ही थी। ऐसे कर्मठ सेवा भावी मनीषी जो निरन्तर हम सभी का उत्साह को अपने बीच न पाकर भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार के हम सभी अधिकारियों, कर्मचारियों की यह सभा शोक व्यक्त करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करती है, और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है वह अपने श्री चरणों में स्थान देकर दिवंगत आत्मा को मोक्ष प्रदान करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार, लखनऊ

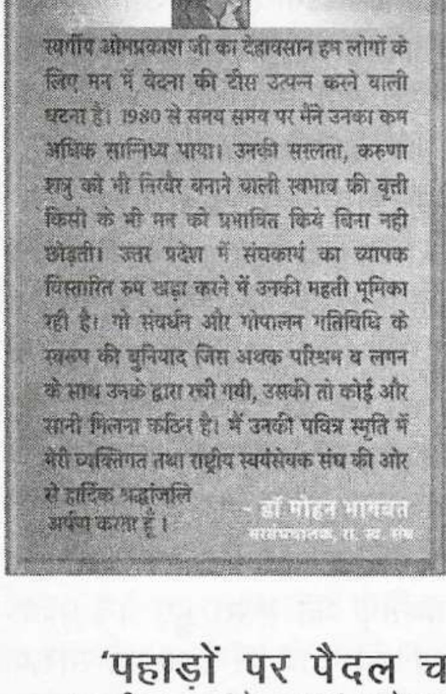

श्री ओम प्रकाश

नामाक्षरी शब्द चित्र

श्री. श्रीसम्पन्न दिवंगतम्, मानव तन मन प्राण।
ओ. ओम कार इव पूज्य तुम, संघ प्रचारक मान।।
म. मनसा वाचा कर्मणा, राष्ट्र कार्य में लीन।
प्र. प्रखर बुद्धि गोभक्त तुम, योजक परम प्रवीण।।
का. काम क्रोध मद लोभ तज, किया रात–दिन काम।।
श. शक्तिपुंज संकल्प दृढ़, सरल विमल निष्काम।।
श्री 'प्रकाश' का यश अमर, वाणी ललित ललाम।
वन्दनीय उस 'ओम' को, आदर सहित प्रणाम।।

डॉ0 शिवभूषण त्रिपाठी

'पहाड़ों पर पैदल चलकर संघ का विस्तार किया ओम प्रकाश जी ने'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सर कार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल ने वरिष्ठ प्रचारक ओमप्रकाश जी को याद करते हुए कहा कि वह 21 साल की उम्र में ही संघ के प्रचारक बन गए थे। उन्होंने सैकड़ों किलोमीटर दूर पर्वतीय क्षेत्रों में पैदल चलकर संघ का कार्य किया। उन्होंने विषम परिस्थितियों में काम किया। वह सरस्वती शिशु मंदिर निरालानगर में ओमप्रकाश की श्रद्धांजलि सभा में बोल रहे थे।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वे निरंतर रचनात्मक कार्यों के बारे में सोचा करते थे। उन्होंने गोरक्षा के साथ ही उसके आर्थिक पक्ष पर भी विचार किया। वे अनेक संगठनों के जनक थे। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि स्वर्गीय ओमप्रकाश जी ने उत्तराखंड के दूर–दराज के क्षेत्रों में भी पहुंचकर संघ को खड़ा किया। विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने कहा कि उनका व्यक्तित्व भूतकाल और भविष्यकाल में भी बना रहेगा।

नवभारत टाइम्स ब्यूरो, लखनऊ

"श्रेष्ठ गो-सेवक थे प्रचारक ओमप्रकाश"

1946 से लेकर वर्ष 2019 तक 73 साल लंबे कार्यकाल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक के अनेक अभियानों के नेतृत्वकर्ता रहे वरिष्ठ प्रचारक ओमप्रकाश की श्रद्धांजलि सभा में उनके जीवन के अनेक पहलू सामने आए। उनको श्रेष्ठ गो–सेवक उ0प्र0 के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत दोनों ने अपने संस्मरण दोहराए। गोसेवा के क्षेत्र में उनके योगदान को जम कर सराहा गया। योगी आदित्यनाथ ने बताया कि इंडियन ऑयल उनकी प्रेरणा से ही गो मूत्र और गोबर से बायो फ्यूल बनाएगा। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने बताया कि हमारे प्रदेश में गोमूत्र की मार्केटिंग शुरू कर दी गई है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि हम आज राष्ट्र निर्माण के पुरोधा को नमन कर रहे हैं। सीएम ने कहा कि उन्होंने 1946 में संघ की सेवा शुरू की थी। वह कहते थे कि जन्म और मरण दोनों बराबर हैं। दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। लगातार काम करते रहे। कहते थे कि रचनात्मक मन खाली नहीं बैठता है। स्वयंसेवकों को कार्य देते रहते थे। उनके कार्यक्रम राष्ट्रसेवा और राष्ट्र निर्माण से जुड़े होते थे। जब अटल जी प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने आईआईटी दिल्ली से मिल कर गो रक्षा पर सेमिनार किया था। उनकी प्रेरणा से ही हमने गो रक्षा में यहां तक पहुंचे हैं। योगी ने कहा कि आज इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन गाय के अवयव से बायो फ्यूल बनाएंगे। वे राष्ट्र ऋषि थे।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि पहाड़ों में संघ का काम बहुत कठिन था। वे साइकिल से बिजनौर से कोटद्वार तक जाते थे। उन्होंने सुदूर पर्वतीय जगहों पर बैठकें की थीं। उनके भारी झोले के साथ वे पहाड़ों पर जाते थे। वे हर स्वयंसेवक की चिंता करते थे। उनकी गो सेवा से प्रेरित होकर हमने भी काम किया। हम गोमूत्र की मार्केटिंग कर रहे हैं। श्रद्धांजलि देने वालों में विधानसभा अध्यक्ष हृदयनारायण दीक्षित, महापौर संयुक्ता भाटिया, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, डिप्टी सीएम डॉ. दिनेश शर्मा, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह, उत्तराखंड भाजपा अध्यक्ष अजय भट्ट, मंत्री आशुतोष टंडन, चेतन चौहान, अनुपमा जायसवाल, स्वाती सिंह, रीता जोशी, विधायक पंकज सिंह, संस्कार भारती से ब्रह्मदेव भाई जी, गोसेवा प्रमुख अजीत महापात्र, सीमा जागरण मंच से अशोक केडिया, केजीएमयू के कुलपति प्रो. एमएलबी भट्ट शामिल रहे।

श्रद्धांजलि सभा में ओमप्रकाश के चित्र पर पुष्प अर्पित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ साथ में उपस्थित भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक ओमप्रकाश की श्रद्धांजलि सभा में याद किए गए उनके योगदान, उप्र के मुख्यमंत्री योगी और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह मौजूद रहे।

स्वयंसेवकों के लिये प्रेरणास्रोत रहेंगे ओमप्रकाश

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक ओमप्रकाश के व्यक्तित्व से राष्ट्रसेवा में लगे स्वयंसेवकों को प्रेरणा लेने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि ओमप्रकाश जी रचनात्मक कार्यों के बारे में सोचते थे। गोरक्षा के लिए उनके कामों को भुलाया नहीं जा सकता।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से गुरुवार को निरालानगर के माधव सभागार में स्व0 ओमप्रकाश जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया था। रविवार को किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज में उनका निधन हो गया था। सह सरकार्यवाह डॉ0 कृष्ण गोपाल और विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने संस्मरण सुनाए। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि ओमप्रकाश के मार्गदर्शन में गोरक्षा अभियान चलाकर गोमाता को बचाने का प्रयास किया गया। उप मुख्यमंत्री डॉ0 दिनेश शर्मा ने कहा कि वे हमारे आदर्श प्रचारक रहे।

वे मुझे राजनीति में लाए त्रिवेन्द्र रावत

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र रावत ने कहा कि ओमप्रकाश ने उत्तराखंड के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में भी संघ को खड़ा किया। श्री रावत ने कहा कि जब मैं प्रचारक जीवन से वापस आया तो उन्होंने कहा कि तुम्हें राजनीतिक क्षेत्र में जाना चाहिए। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह, आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारकों में राकेश जैन, वीरेन्द्र सिंह, गिरीश, अजित पात्रा, केजीएमयू के कुलपति डॉ0 एमएलबी भट्ट ने भी श्रद्धांजलि दी। सांसद रीता बहुगुणा जोशी, महापौर संयुता भाटिया भी मौजूद रहीं।

हिन्दुस्तान, लखनऊ

ध्येय समर्पित व्यक्तित्व के रूप में सुषमा जी की स्मृति सदा रहेगी

अत्यंत अकल्पनीय, अविश्वसनीय दुःखद समाचार है **श्रीमती सुषमा स्वराज जी** का असामयिक निधन। यह अत्यंत वेदनादायक है। लगभग 45 वर्षों का उनका सामाजिक, राजनैतिक जीवन विविध दृष्टि से आदर्शवत और अनुकरणीय रहा है। एक आदर्श कार्यकर्ता, कुशल नेत्री, सक्षम और प्रभावी मंत्री, ध्येय समर्पित व्यक्तित्व के रूप में उनकी प्रतिमा हम सबके स्मृति में सदा रहेगी। हृदय में मातृवत् स्नेह, देश और समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील अंतःकरण और प्रतिकूलताओं पर मात करने की तेजस्विता से वे सदा कर्मशील रही हैं।

स्वास्थ्य की मर्यादाओं को समझकर अपने आप को भागदौड़ की राजनीति से मुक्त करते हुए सामाजिक कार्य में सहयोग करते रहने की इच्छा उन्होंने प्रकट की थी, परन्तु इस दुःखद घटना से हम व्यथित हैं।

वर्तमान में देश में घटित ऐतिहासिक पहल से वे प्रसन्न थीं और यह उन्होंने हम से विदा लेते समय प्रकट किया है। ऐसे परिवर्तन के काल में उनका स्वर्गगमन अत्यंत असहनीय है। इस दुःखद घड़ी में हम उनके सभी परिवारजनों के प्रति वेदनापूर्ण हृदय से संवेदना प्रकट करते हैं। ईश्वर हम सभी को यह आघात सहन करने का बल प्रदान करे। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि अपने चरणों में दिवंगत आत्मा को स्थान प्रदान करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मोहन भागवत
सरसंघचालक

सुरेश (भय्याजी) जोशी
सरकार्यवाह

रुग्णवस्था में अस्पताल में माननीय ओम प्रकाश जी

स्व0 ओम प्रकाश जी को श्रद्धांजलि

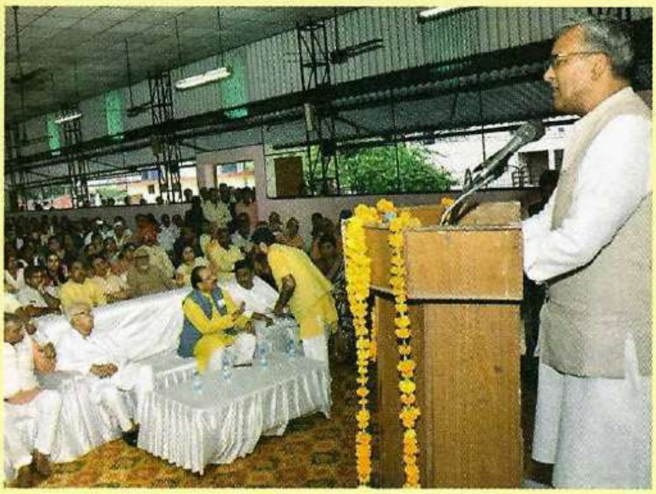

नेत्र ज्योति अनुष्ठान, नेत्र कुम्भ चिकित्सालय

सेवा संवाद के नवीन कार्यालय का उदघाटन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र

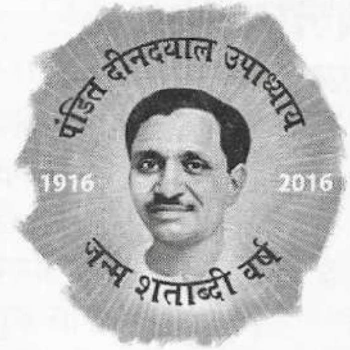

ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सेवा हि परमो धर्मः

अनुरोध

जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाउराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)
मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।

श्रद्धांजलि

स्व0 अरुण जेटली पंचतत्व में विलीन

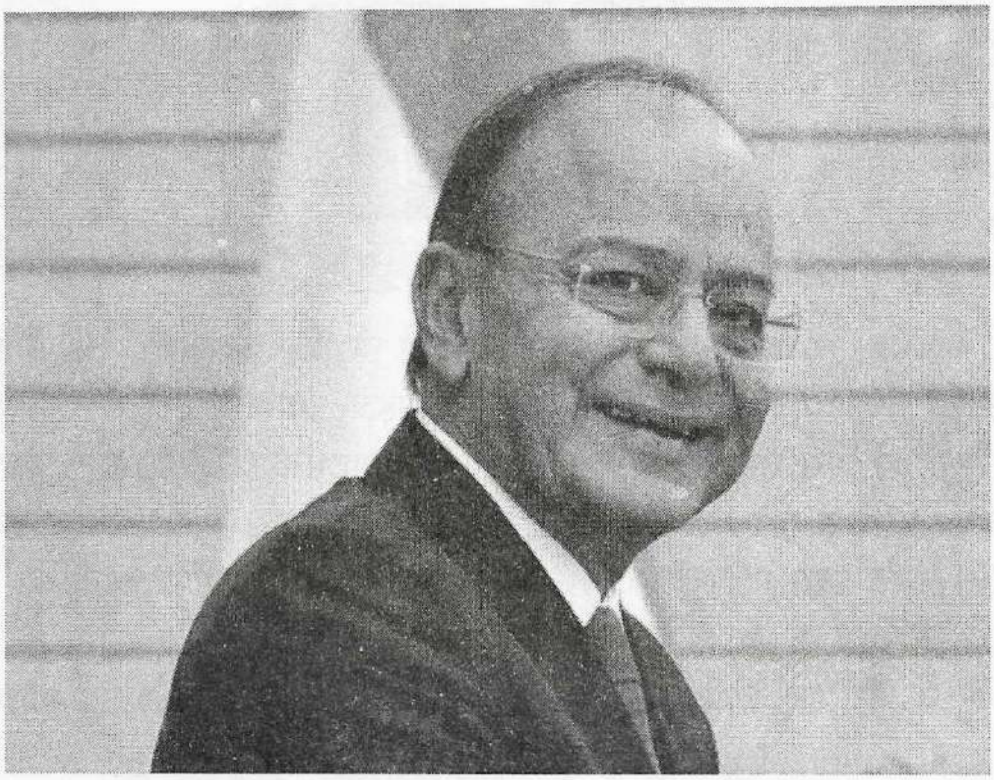

मानव परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। परमात्मा के वे समस्त गुण मानव में विद्यमान रहते हैं। इसीलिए मानव में अपने अन्तर्निहित गुणों को विकसित कर देवत्व प्राप्त करने की क्षमता विद्यमान रहती है। तभी तो मानव–नर से नारायण बन कर विश्ववन्द्य हो जाता है। ऐसी ही कुछ विभूतियां जिन्होंने अपनी सेवाएं समाज को अर्पित कर इस संसार–सागर में कीर्तिमान अर्जित किया था, अपना तन–मन–धन सब कुछ समाज को सौंप कर अपने ज्ञान–बल बुद्धि से समाज को जागरूक कर, सेवाकर एक मानक स्थापित किया जो आज हमारे बीच नहीं है उनका पार्थिव शरीर पंचतत्वों में विलीन हो गया है। हम उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे आपको श्रेष्ठ स्थान दें, सेवा संवाद परिवार उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सेवा संवाद परिवार, लखनऊ

अपना चित्त शुद्ध हो तो शत्रु भी मित्र हो जाते है, सिंह और सांप भी अपना हिंसा भाव भूल जाते हैं, विष अमृत हो जाता हैं, आघात हित होता है, दुःख सर्व सुख स्वरूप फल देने वाला बनता है, आग की लपट ठंडी–ठंडी हवा हो जाती है। जिसका चित्त शुद्ध है, उसे सब जीव अपने जीवन के समान प्यार करते हैं।

नदी की स्वच्छता हेतु प्रवेश - जल सेवक सन्त बलबीर सिंह सींचेवाल

भारत में सन्त, महात्माओं की छवि मुख्यतः धर्मोपदेशक की है, पर कुछ सन्त पर्यावरण संरक्षण, सड़क एवं विद्यालय निर्माण आदि द्वारा नर सेवा को ही नारायण सेवा मानते रहे हैं। ऐसे ही एक सन्त हैं बलबीर सिंह सींचेवाल, जिन्होंने सिख पन्थ के प्रथम गुरु नानकदेव के स्पर्श से पावन हुई **'काली बेई'** नदी को शुद्ध कर दिखाया। यह नदी होशियारपुर जिले के धनोआ गांव से निकलकर हरी के पत्तन में रावी और व्यास नदी में विलीन होती है।

बलबीर सिंह जी ग्राम सींचेवाल के निवासी हैं। एक बार भ्रमण के दौरान उन्होंने सुल्तानपुर लोधी (जिला कपूरथला) गांव के निकट बहती काली बेई नदी को देखा। वह इतनी प्रदूषित हो चुकी थी कि स्नान और आचमन करना तो दूर, उसे छूने से भी डर लगता था। दुर्गन्ध के कारण उसके निकट जाना भी कठिन था। 162 किमी लम्बी नदी में निकटवर्ती 35 शहरों का मल–मूत्र एवं गन्दगी गिरती थी। नदी के आसपास की जमीनों को भ्रष्ट पटवारियों ने बेच दिया था या फिर उन पर अवैध कब्जे हो चुके थे। लोगों का ध्यान इस पवित्र नदी की स्वच्छता की ओर बिल्कुल नहीं था।

ऐसे में संकल्प के धनी बलबीर सिंह जी ने कारसेवा के माध्यम से नदी को शुद्ध करने का बीड़ा उठाया। उनके साथ 20–22 युवक भी आ जुटे। 16 जुलाई, 2001 को उन्होंने वाहे गुरु को स्मरण कर गुरुद्वारा बेर साहिब के प्राचीन घाट पर अपने साथियों के साथ नदी में प्रवेश किया, पर यह काम इतना आसान नहीं था। स्थानीय माफिया, राजनेताओं, शासन ही नहीं, तो गुरुद्वारा समिति वालों ने भी इसमें व्यवधान डालने का प्रयास किया। उन्हें लगा कि इस प्रकार तो हमारी चौधराहट ही समाप्त हो जाएगी। कुछ लोगों ने उन कार सेवकों से सफाई के उपकरण छीन लिये।

पर, सन्त सींचेवाल ने धैर्य नहीं खोया। उनकी छवि क्षेत्र में बहुत उज्ज्वल थी। वे इससे पहले भी कई विद्यालय और सड़क बनवा चुके थे। उन्हें न राजनीति करनी थी और न ही किसी संस्था पर अधिकार अतः उन्होंने जब प्रेम से लोगों को समझाया, तो बात बन गयी और फिर तो कारसेवा में सैकड़ों हाथ जुट गये। उन्होंने गन्दगी को शुद्ध कर खेतों में डलवाया, इससे खेतों को उत्तम खाद मिलने लगी और फसल भी अच्छी होने लगी। सबमर्सिबल पम्पों द्वारा भूमि से पानी निकालने की गति जब कम हुई, तो नदी का जल स्तर भी बढ़ने लगा। जब समाचार पत्रों में इसकी चर्चा हुई, तो हजारों लोग पुण्य कार्य में योगदान देने लगे।

सन्त जी ने न केवल नदी को शुद्ध किया, बल्कि उसके पास के 160 किमी लम्बे मार्ग का भी निर्माण कराया। किनारों पर फलदार पेड़ और सुन्दर सुगन्धित फूलों के बाग लगवाये। उन्होंने पुराने घाटों की मरम्मत कराई और नये घाट बनवाये। नदी में नौकायन का प्रबन्ध कराया, जिससे लोगों का आवागमन उस ओर खूब होने लगा। इससे उनकी प्रसिद्धि चहुँ ओर फैल गयी। होते–होते यह प्रसिद्धि पूर्व राष्ट्रपति स्व0 डॉ. अब्दुल कलाम तक पहुंची। वे एक वैज्ञानिक होने के साथ ही पर्यावरण प्रेमी भी थे। 17 अगस्त, 2006 को वे स्वयं इस प्रकल्प को देखने आये। उन्होंने देखा कि यदि एक व्यक्ति ही सत्संकल्प से काम करे, तो वह असम्भव को सम्भव कर सकता है। सन्त जी को पर्यावरण के क्षेत्र में अनेक राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय सम्मान मिले हैं, पर वे विनम्र भाव से इसे गुरु कृपा का प्रसाद ही मानते हैं। 2017 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। ❑

सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से युवाओं में बढ़ रही है तनाव, नकारात्मकता की समस्या

❑ अभिषेक खरे

फेसबुक, स्नैपचैट, रेडिट, इंस्टाग्राम आदि सोशल साइट्स का अधिक उपयोग करने से ये हमारे दिमाग पर हावी हो जाता है, हम इस इंतजार में रहते की हमारे पोस्ट पर ज्यादा से ज्यादा लाइक्स आएं, ये हमारे मस्तिष्क को हाईजैक कर देता है। हमारे द्वारा किये गए पोस्ट पर अगर कम लाइक्स आते हैं तो हम परेशान हो जाते हैं तथा हमारा दिमाग पोस्ट को लेकर अलग–अलग सवाल बना देता है जिससे हम डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं, सोशल मीडिया को लेकर टेक–एक्सपर्ट लगातार फिक्रमंद रहते हैं। 2016 में हुए एक शोध में ये परिणाम भी आया था कि सोशल मीडिया पर ज्यादा समय व्यतीत करने का सीधा संबंध डिप्रेशन से है। हाल ही में दैनिक भास्कर में प्रकाशित आलेख जिसमें फेसबुक को लाइक बटन देने वाले जस्टिन रिसेंसटीन ने भी इस बात को माना है कि सोशल मीडिया का अधिक उपयोग हमें इसका आदी बना सकता है यह एक नशे की भांति कार्य करता है। उनका मानना है कि सोशल मीडिया एक वर्चुअल वर्ल्ड (आभासी दुनिया) है। इसकी वजह से सबसे पहले तो हम डिस्टोपिया (काम से ध्यान भटकना) के शिकार हो रहे है। साथ ही ये असली दुनिया से भी हमें दूर कर देता है। किसी पोस्ट पर ज्यादा लाइक्स आते हैं, तो वही हमारे लिये खुशी होती है। ये सूडो–हैप्पीनेस (नकली खुशी) है। हम अटेंशन इकोनॉमी के शिकार हैं। यहाँ हमें सिर्फ दूसरों का ध्यान आकर्षित करना है। लाइक्स पाने हैं। ये नहीं होता तो हमारे लिए डिप्रेशन तक का खतरा पैदा हो जाता है।

युवा वर्ग की जीवनशैली में असर –

सूचना क्रांति के इस युग मे आज सोशल मीडिया फेसबुक, ट्विटर, स्नैपचैट, रेडिट, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्म युवाओं के लिये दोधारी तलवार साबित हो रहे हैं या तो ज्यादातर युवा इन पर अपनी समझ से नहीं चलते बल्कि सामने वाले के अनुसार अनुसरण करते है। उन्हें इसकी लत लग जाती है।

सोशल मीडिया के प्रति युवाओं की दीवानगी जहाँ कई मायनों में सार्थक नजर आती है, वहीं इसके दुरुपयोग के मामले भी सामने आते रहते हैं। सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से युवाओं में आलस्य, डिप्रेशन, तनाव, नकारात्मकता आदि को देखा गया है।

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले युवा अपने जीवन का नियंत्रण अन्य लोगों के हाथों में दे देते हैं। सोशल मीडिया पर अधिक सक्रियता से युवा प्रभावित हो रहा है, युवाओं को इसे बेलैंस करना बहुत जरूरी है। अन्यथा उनमें डिप्रेशन और स्ट्रेस लेवल भी बढ़ेगा, यह बहुत ज्यादा सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने का असर है। यदि कोई दो घंटे से ज्यादा सोशल मीडिया पर सक्रिय रहता है, तो इसका असर उसके स्वास्थ्य पर पड़ेगा। जिसके कारण युवाओं में सम्बन्ध बदलाव देखे गए हैं। जिनके कारण उनकी शिक्षा और व्यक्तिगत संबंधों पर बहुत असर पड़ता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर असर

सोशल मीडिया ने हमें जितना ज्यादा लोगों से जोड़ने का काम किया है, उससे कहीं ज्यादा इसने हमारे मन मस्तिष्क पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। हम आज तकनीक के मामले में बहुत ज्यादा आधुनिक हो चुके हैं, लेकिन हम यह भूलते जा रहे हैं कि इसके विपरीत परिणामों ने हमारे अंदर घर कर लिया है। सोशल मीडिया ने ना केवल हमारे भीतर मानसिक कमजोरी को पैदा किया, बल्कि इन कमोजरियों के साथ–साथ मानसिक रोगों को भी जन्म दिया है। इसके कारण हमारे भीतर की रचनाशीलता कमजोर होती जा रही है। हम सभी लोगों के पास होते हुए भी उनसे बहुत ज्यादा दूर हो चुके हैं। ज्यादा से ज्यादा समय सोशल मीडिया पर बिताने के कारण हमें इसकी आदत हो गयी है और इनका हमारे मष्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ा है। क्योंकि जिस तरह से हम आज सोशल मीडिया पर लगातार अपना समय बिता रहे हैं, इसका सीधा प्रभाव हमारे

मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। आइए जानते हैं सोशल मीडिया और मानसिक स्वास्थ्य के बीच क्या सम्बन्ध है।

सोचने समझने की शक्ति पर गहरा असर –

सोशल मीडिया आज हमारे लिए एक सुविधा के साथ–साथ एक बड़ी समस्या भी बनता जा रहा है। खासकर युवाओं के लिए, जिन युवाओं को एक समय पर उनकी नई सोच के लिए जाना जाता था, आज सोशल मीडिया ने उनसे उनकी उस सोच को छीन लिया है। आज लोग सोशल मीडिया का इतना ज्यादा प्रयोग कर रहे हैं कि उनकी खुद की सोचने और समझने की शक्ति कम होने लगी है। ऐसा इसलिए क्योंकि हम जो कुछ भी सोशल मीडिया पर देखते हैं उसे ही सत्य मान लेते हैं और उसी पर विश्वास करने लगते हैं। जिसके कारण दिमाग में सोचने समझने की क्षमता पर फर्क पड़ने लगता है।

सोशल डिसऑर्डर –

सोशल मीडिया एक तरह का वर्चुअल समाज है, जहां हमारे जैसे लाखो लोग होते हैं जिनसे हम रोजाना ऑनलाइन मिलते हैं और उनसे अपनी बातों को साझा करते हैं। इसके कारण हमने बहुत से दोस्त तो बना लिए है लेकिन जो असल में हमारे करीबी हैं, उनसे हम पूरी तरह से अलग हो जाते है। क्योंकि सोशल मीडिया हमारे मन मस्तिष्क पर इस कदर हावी हो जाता है कि हम उससे बाहर निकलना नहीं चाहते हैं और ज्यादा से ज्यादा वही पर अपना समय बिताना चाहते हैं। ऐसे में बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कट जाते हैं। बाहर की दुनिया से दूर होते चले जाना ही सोशल डिसऑर्डर के होने की ओर संकेत करता है।

एडिक्टिव डिसऑर्डर को जन्म देता है –

किसी भी चीज को सामान्य से ज्यादा प्रयोग करना लत कहलाता है। इस तरह की प्रवृति आने के पीछे मानसिक विकारों को भी कारण ठहराया जाता है। आज सोशल मीडिया से भी लोगों में इस तरह की प्रवृति जागृत हो रही है। इसके कारण लोग बाकी सभी कामों को छोड़ कर सिर्फ और सिर्फ सोशल मीडिया में अपना वक्त जाया कर रहे हैं जो कि ठीक नहीं है। इसका सबसे ज्यादा असर हमारे मस्तिष्क पर पड़ता है। हमारे भीतर की रचनात्मकता खत्म होती जा रही है। इस समस्या से कई अन्य तरह के मानसिक विकार उत्पन्न हो रहे हैं, जो हमारी सेहत के लिए बहुत ज्यादा खतरनाक हैं। ❑

सच्चा जप-दीन दुःखियों की सेवा

संत ज्ञानेश्वर नदी किनारे जा रहे थे। समीप ही नदी में एक लड़का स्नान कर रहा था। एकाएक उसका पैर फिसल गया, वह तेज बहाव में चला गया। सहायता के लिये चिल्लाया, पर किनारे बैठे महात्मा अपने जप में लगे रहे। उन्होंने एक बार डूबते बालक को देख लिया और फिर आँख बंद कर ली। संत ज्ञानेश्वर बिना विलम्ब किये नदी में कूद पड़े और डूबते बालक को बाहर ले आये। किनारे जप कर रहे महात्मा से संत ज्ञानेश्वर ने पूछा–आप क्या कर रहे हैं? उत्तर मिला–जप कर रहैं। पुनः महात्मा ने आंखें बंद कर लीं। संत ज्ञानेश्वर ने पूछा–क्या ईश्वर के दर्शन हुए? उत्तर मिला–नहीं बोले–मन स्थिर नहीं हो रहा है। संत ज्ञानेश्वर ने कहा तो उठो, पहले दीन–दुखियों की सेवा करो, उनके कष्टों में हिस्सा बटाओं अन्यथा उपासना का कोई विशेष लाभ नहीं मिलेगा। महात्मा को अपनी भूल मालूम हुई कि सच्चा जप तो यह था कि डूबते हुए बच्चे को बचाया जाता। उसी दिन से वे महात्मा दीन–दुखियों की सेवा में लग गये।

याद रखो–तुम्हारे पास जो कुछ है, सब भगवान का है और भगवान की सेवा के लिये ही है। उसे अपना मानकर उसका केवल अपने भोग में उपयोग करना बेईमानी है। इस बेईमानी से बचो और समस्त प्राप्त साधनों को भगवान की सेवा में लगाओं। सेवक में सात बाते होनी चाहिए–(1) सेवा में विश्वास, (2) सेवा की पवित्रता, (3) सेवा में गौरव, (4) सेवा में आत्मसंयम, (5) सेवा में उत्साह, (6) सेवा में प्रीति और (7) विनय भाव।

साभार : महाकौशल–संदेश

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी–91, निराला नगर, लखनऊ – 226020 (उ.प्र.)
फोन–फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं–

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए–** रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए–** रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक **मोतियाबिन्द पीड़ित** नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए–** रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए–** रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए–** प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए–** रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए–** रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए–** रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **680610100009948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 सितम्बर	जन्म–दिवस	हिन्दीभक्त फादर कामिल बुल्के
2 सितम्बर	बलिदान–दिवस	अनाथ बन्धु एवं मृगेन्द्र दत्त का बलिदान
4 सितम्बर	जन्म–दिवस	प्रातः स्मरणीय दादा भाई नौरोजी
5 सितम्बर	इतिहास–स्मृति	इमरती देवी : पर्यावरण संरक्षण
7 सितम्बर	पुण्य–तिथि	सिख पन्थ के प्रवर्तक : गुरु नानकदेव
9 सितम्बर	जन्म–दिवस	युग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
10 सितम्बर	बलिदान–दिवस	क्रान्तिकारी बाघा जतीन का बलिदान
11 सितम्बर	जन्म–दिवस	भूदान यज्ञ के प्रणेता : विनोबा भावे
11 सितम्बर	पुण्य–तिथि	नारी चेतना का स्वर : महादेवी वर्मा
12 सितम्बर	पुण्य–तिथि	तमिल काव्य में राष्ट्रवाद के प्रणेता सुब्रह्मण्यम भारती
14 सितम्बर	बलिदान–दिवस	लाला जयदयाल का बलिदान
15 सितम्बर	जन्म–तिथि	आधुनिक विश्वकर्मा : श्री विश्वेश्वरैया
15 सितम्बर	पुण्य–तिथि	सेवा का दीप : डॉ0 राकेश पोपली
16 सितम्बर	जन्म–तिथि	जन्मजात संघचालक : (बबुआ जी)
17 सितम्बर	जन्म–तिथि	हिन्दू धर्मग्रन्थों के प्रसारक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार
18सितम्बर	बलिदान–दिवस	शंकर शाह और रघुनाथ शाह कटारपुर
18सितम्बर	बलिदान–दिवस	गोभक्तों का अनुपम बलिदान
19सितम्बर	जन्म–दिवस	भारत माता मन्दिर के संस्थापक स्वामी सत्यमित्रानन्द
20सितम्बर	जन्म–तिथि	गायत्री परिवार के संस्थापक : आचार्य श्रीराम शर्मा
20 सितम्बर	पुण्य–तिथि	भारतीय संस्कृति के संवाहक डॉ0 हरवंशलाल ओबराय
21 सितम्बर	पुण्य–तिथि	मा0 मोरोपन्त पिंगले का गो–चिन्तन
22 सितम्बर	जन्म–तिथि	देशभक्त श्रीनिवास शास्त्री
23 सितम्बर	पुण्य–तिथि	बहुआयामी व्यक्तित्व : आचार्य तुलसी
24 सितम्बर	जन्म–तिथि	तिरंगे की प्रथम निर्माता : भीकाजी कामा
25 सितम्बर	जन्म–तिथि	एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय
27 सितम्बर	जन्म–तिथि	अमृत बाँटती माँ अमृतानन्दमयी
27 सितम्बर	जन्म–दिवस	हिन्दू जागरण के सूत्रधार : अशोक सिंहल
28 सितम्बर	जन्म–तिथि	हिन्दी के दधीचि पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी
28 सितम्बर	जन्म–दिवस	स्वर सम्राज्ञी : लता मंगेशकर
29 सितम्बर	बलिदान–दिवस	स्वतन्त्रता सेनानी : मातंगिनी हाजरा
30 सितम्बर	पुण्य–तिथि	महान् गोभक्त : लाला हरदेवसहाय
30 सितम्बर	जन्म–दिवस	कर्नाटक में हिन्दी के सेवक श्री विद्याधर गुरूजी

शिक्षक दिवस ज्ञान का प्रकाश

❑ श्याम बाबू

सही—गलत के फर्क को,
शिक्षक बताता है।
शिष्यों को सही शिक्षा,
शिक्षक ही दे पाता है।

बच्चों के भविष्य को,
शिक्षक सजाता है।
ज्ञान के प्रकाश को,
शिक्षक जलाता है।

ऊंचे शिखर पर शिष्य को,
शिक्षक ही चढ़ाता है।
बच्चों के भविष्य में,
और निखार लाता है।

शिष्य को कभी शिक्षक,
नहीं ढाल बनाता है।
असफल होते जब कार्य में,
अफसोस जताता है।

शिक्षक ही समाज का,
उत्तम जो ज्ञाता है।

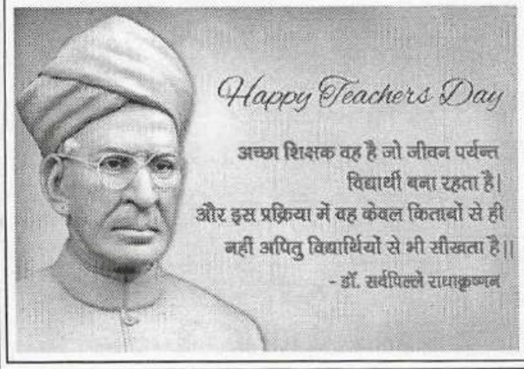

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : **भाऊराव देवरस सेवा न्यास**

सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738

Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क **200/-** अथवा आजीवन शुल्क **2000/-** रुपये **'सेवा संवाद'** के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. .... दिनांक .... बैंक .... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है : ....

नाम : ....

पता : ....

....

....

जिलाः

प्रदेश : .... पिनः ....

मोबाइलः ....

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

दादाभाई नौरोजी जीवन परिचय

दादाभाई नौरोजी का प्रारंभिक जीवन–

भारत के ग्रैंड ओल्ड मैन कहे जाने वाले दादाभाई नौरोजी 4 सितंबर, 1825 को मुंबई के एक गरीब पारसी पुरोहित परिवार में जन्मे थे। उनके पिता का नाम नौरोजो पलांजी डोरडी था, वहीं जब उन्होंने अपने पिता को सही तरीके से पहचानना ही शुरु किया था तभी उनके पिता इस दुनिया को छोड़कर चल बसे थे। 4 वर्ष की आयु में ही जिसके बाद उनकी माता मनेखबाई ने ही उनका पालन–पोषण किया और उन्हें माता–पिता दोनों का प्यार दिया। यही नहीं इस कठिन दौर का हिम्मत से सामना करते हुए उनकी मां ने एक पिता की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई और उन्होंने दादा भाई नौरोजी को निर्धनता के बाबजूद भी उच्च शिक्षा हासिल करवाई।

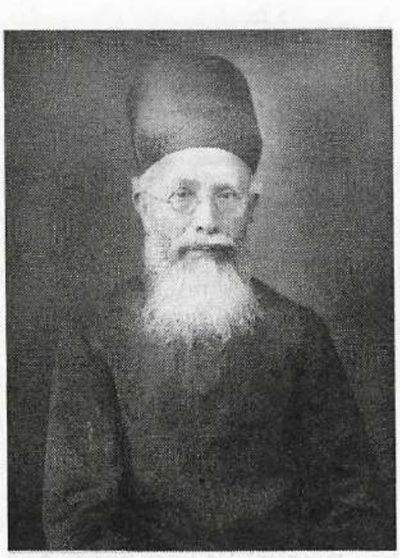

दादाभाई नौरोजी की शिक्षा

भारत के ग्रैंड ओल्ड मैन नौरोजी ने अपनी शुरुआती शिक्षा तो नेटिव एजुकेशन सोसायटी स्कूल से ली थी लेकिन बाकी की पढ़ाई उन्होंने मुंबई के एल्फिंस्टन कॉलेज से पूरी की थी। बचपन से ही नौरोजी पढ़ाई–लिखाई में काफी अच्छे थे और बुद्धिमान भी थे, उन्हें कोई भी चीज बेहद जल्द समझ आती थी। उन्हें 15 साल की उम्र में ही स्कॉलरशिप भी मिली थी।

वहीं उनकी बुद्धिमत्ता, कुशलता, सादगी, और विनम्रता को देखकर प्रिंसिपल ने उन्हें इंग्लैण्ड जाकर शिक्षा पूरी करने के लिए वित्तीय सहायता भी देनी चाही लेकिन दुर्भाग्य से वह इंग्लैण्ड नही जा पाए।

दादाभाई नौरोजी जी का करियर

पारसी पुरोहित परिवार से ताल्लुक रखने वाले दादाभाई नौरोजी ने 1 अगस्त साल 1851 को रहनुमाई मज्दायास्त्री सभा का भी गठन किया था। जिसका मुख्य मकसद पारसी धर्म के लोगों को एक साथ इकट्ठा करना था।

दादा भाई नौरोजी गणित और अंग्रेजी विषय के एक अच्छे छात्र थे। यही वजह है कि गणित में अपनी मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद वे साल 1855 में मुंबई के एल्फिंस्टन कॉलेज में ही महज 27 साल की उम्र में गणित और भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर बन गए। उस समय वे किसी स्कूल में शिक्षक बनने वाले पहले भारतीय भी थे।

एलफिंस्टन कॉलेज में शिक्षक पद पर सम्मानित होकर उन्होंने 6 साल तक अपनी सेवाएं दी। उन्होंने समाज के लिए भी कई काम किए और लोगों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया यही नहीं उन्होंने निःशुल्क पाठशालाओं की व्यवस्था भी की, ताकि निर्धन व्यक्ति भी आसानी से शिक्षा ग्रहण कर सके और योग्य बन सके।

वहीं 1860 के दशक की शुरुआत में उन्होंने सक्रिय रूप से भारतीयों के उत्थान के लिए काम करना शुरु किया। वहीं भारत में वे ब्रिटिशों की प्रवासीय शासनविधि के सख्त खिलाफ थे। इसके साथ ही इन्होंने ब्रिटिशों के सामने "ड्रेन थ्योरी" भी प्रस्तुत की थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि किस तरह से ब्रिटिशर्स भोले–भाले और बेकसूर भारतीयों पर अत्याचार कर रहे हैं और उनका शोषण कर रहे हैं और हमारे देश को आर्थिक रूप से कमजोर कर रहे हैं।

इसके अलावा दादा भाई नौरोजी क्रूर अंग्रेज शासकों की चालाकी का भी इस थ्योरी में जिक्र किया था कि कैसे अंग्रेज योजनाबद्ध तरीके से भारत के धन और संसाधनों में कमी ला रहे हैं और भारतीयों को ही उनके संसाधनों का इस्तेमाल नहीं

करने दे रहे हैं। वहीं नौरोजी की इस थ्योरी के बाद गुलाम भारत में अंग्रेजों की नींव को हिलाकर रख दिया था। इसके अलावा इसके बाद दादा भाई नौरोजी का अंग्रेजों पर इतना प्रभाव पड़ा था कि वे इनके नाम से ही खौफ खाने लगी थी।

दादाभाई नौरोजी का राजनैतिक करियर

दादा भाई नौरोजी के अंदर बचपन से ही देशप्रेम की भावना भरी हुई थी। वे शुरू से ही सामाजिक एवं क्रांतिकारी विचारधारा वाले एक ऐसी शख्सियत थे, जिन्होंने साल 1853 में ईस्ट इंडिया कंपनी के लीज नवीनीकरण का विरोध भी किया था। वहीं इस मसले में दादा भाई ने क्रूर ब्रिटिश सरकार को तमाम याचिकाएं भी भेजी थी, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने उनकी इस बात को सिरे से नकार दिया और लीज को रिन्यू कर दिया था।

वहीं भारत के राष्ट्र पितामह और भारत की राजनीति के जनक दादाभाई नौरोजी का मानना था कि भारत के लोगों में अज्ञानता की वजह से ही क्रूर ब्रिटिश शासक, मासूम भारतीयों पर जुल्म ढा रहे हैं और उन पर राज कर रहे हैं। उन्होंने व्यस्कों की शिक्षा के लिए ज्ञान प्रसारक मंडली की भी स्थापना की थी। इसके अलावा उन्होंने भारत की समस्याओं का समाधान करने के मकसद से राज्यपालों और वायसराय को कई याचिकाएं लिखीं।

भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी दादाभाई नौरोजी का निधन

दादाभाई नौरोजी, अपनी जिंदगी के आखिरी दिनों में अंग्रेजों द्वारा भारत के बेकसूर लोगों पर अत्याचार करने और उनके शोषण पर लेख लिखा करते थे। इसके अलावा दादाभाई नौरोजी इस विषय पर भाषण दिया करते थे, वहीं दादाभाई नौरोजी ने ही भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की नींव रखी थी।

वहीं 30 जून, 1917 को 91 साल की उम्र में भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी दादाभाई नौरोजी का स्वास्थ्य सही नहीं होने की वजह से ही उनकी मौत हो गई ।

दादाभाई नौरोजी ने अपनी अंतिम सांस मुम्बई में ही ली। वहीं वे भारत में राष्ट्रीय भावनाओं के जनक थे, जिन्होंने देश मे स्वराज की मांग की थी और स्वतंत्रता आंदोलन की नींव डाली थी।

दादाभाई नौरोजी का योगदान

1. शिक्षा पूरी करने बाद उनकी बम्बई के एलफिन्स्टन कॉलेज में गणित के अध्यापक के रूप में नियुक्ती हुयी। इस कॉलेज में अध्यापक होने का सम्मान पाने वाले वो पहले भारतीय थे।
2. 1851 में लोगों में सामाजिक और राजकीय सवालों पर जागृती लाने के लिये दादाभाई नौरोजी ने 'रास्त गोफ्तार' (सच्चा समाचार) ये गुजराती साप्ताहिक शुरु किया।
3. 1852 में दादाभाई नौरोजी और नाना शंकर सेठ इन दोनों ने आगे बढ़कर बम्बई में 'बॉम्बे एसोसिएशन' इस संस्था की स्थापना की। हिंदू जनता की दुख, कठिनाइयाँ अंग्रेज सरकार को दिखाना और जनता के सुख के लिये सरकार नें हर एक बात के लिये मन से मदद करनी चाहिये, ये इस संस्था की स्थापना का उददेश्य था।
4. 1855 में लंडन के 'कामा और कंपनी' के मैनेजर के रूप में वहाँ गये।
5. 1865 से 1866 इस समय में उन्होंने लंडन के यूनीवर्सिटी कॉलेज मे गुजराती भाषा के अध्यापक के रूप में भी काम किया।
6. 1866 में दादाभाई नौरोजी ने इंग्लैंड में रहते समय में 'ईस्ट इंडिया असोसिएशन' इस नाम की संस्था की स्थापना की। हिंदू लोगों की आर्थिक समस्या के बारे में सोच कर और उन सवालों पर इंग्लैंड के लोगों का वोट खुद को अनुकूल बना लेना ये इस संस्था का उददेश्य था।
7. 1874 में बड़ौदा संस्थान के मुंशी पद की जिम्मेदारी उन्होंने स्वीकार की। बहुत सुधार करने की वजह से उनकी कामगिरी संस्मरणीय रही। पर दरबार के लोगों की कार्यवाही के वजह से दादाभाई नौरोजी कम समय में मुन्शी पद छोड़कर चले गये।

8. 1875 मे वो बम्बई महानगरपालिका के सदस्य बने।
9. 1885 मे बम्बई प्रातिय कायदेमंडल के सदस्य हुये।
10. 1885 में बम्बई मे राष्ट्रीय सभा की स्थापना की गयी उसमें दादाभाई नौरोजी आगे थे।
11. 1886 (कोलकता), 1893 (लाहौर) और 1906 (कोलकाता) ऐसे तीन अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में उन्हें चुना गया।
12. 1892 मे इंग्लंड मे के 'फिन्सबरी' मतदार संघ में से वो हाउस ऑफ कॉमन्सवर चुनकर आये थे। ब्रिटिश संसद के पहले हिंदू सदस्य बनने का सम्मान उनको मिला।
13. 1906 मे कोलकाता में अधिवेशन था। तब दादाभाई नौरोजी उसके अध्यक्ष थे उस अधिवेशन मे स्वराज्य की मांग की गयी। उस मांग को दादाभाई नौरोजी ने समर्थन दिया।

ब्रिटिश राज्यकर्ता भारत की बहुत आर्थिक लूट कर रहे थे। ये दादाभाई ने 'लूट का सिद्धांत' या 'निःसारण सिद्धांत' से स्पष्ट किया।

❑

राष्ट्रीय एकात्मता-अखंडता को पुष्ट करने वाली पहल का अभिनंदन करना चाहिए

भारतीय संविधान के अस्थायी प्रावधान अनुच्छेद 370 को समाप्त करने और जम्मू कश्मीर राज्य के पुनर्गठन पर पू. सरसंघचालक और माननीय सरकार्यवाह का वक्तव्य–

भारतीय संविधान के अस्थायी प्रावधान अनुच्छेद 370 को समाप्त कर भारत के संविधान को अन्य राज्यों के समान जम्मू कश्मीर राज्य में भी पूर्ण रूप से लागू करने तथा जम्मू कश्मीर राज्य के पुनर्गठन के भारत सरकार के साहसिक तथा ऐतिहासिक निर्णय एवं संसद के दोनों सदनों द्वारा इसके अनुमोदन का हम स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

संविधान निर्माताओं की प्रारम्भ से ही यह मंशा थी कि भारत का संविधान भारत के सभी राज्यों में समान रूप से लागू हो। तात्कालिक विशेष परिस्थितियों के कारण अनुच्छेद 370 के अस्थायी प्रावधान को भारतीय संविधान में जोड़ा गया था। सरकार के इस निर्णय से संविधान निर्माताओं की यह इच्छा पूर्ण हुई है। संवैधानिक दृष्टि से अब जम्मू कश्मीर राज्य भी भारत के सब राज्यों के समान है। राज्य के पुनर्गठन से लद्दाख क्षेत्र के लोगों की दीर्घकालिक अभिलाषा पूर्ण हुई, अब उनके समन्वित विकास में देश के सहयोग का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है।

अनुच्छेद 370 के दुरुपयोग से उत्पन्न संवैधानिक विसंगतियों को दूर करने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. प्रेमनाथ डोगरा जी के नेतृत्व में प्रजा परिषद का ऐतिहासिक आंदोलन, जम्मू कश्मीर सहित भारत के देशभक्तों ने सतत संघर्ष किया, बलिदान दिया, यातनाएं सहीं, उन सभी का हम कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करते हैं।

जम्मू कश्मीर के सभी निवासियों के लिए यह हर्ष का विषय है कि इस निर्णय से देश के अन्य राज्यों की तरह भारतीय संविधान के अन्तर्गत सुशासन एवं समग्र विकास का अवसर उन्हें भी प्राप्त होगा। शेष भारत की जनता जम्मू कश्मीर के समाज के विकास एवं कल्याण के कार्य में पूर्ण रूप से सम्मिलित होगी, यह हमें विश्वास है। सभी देशवासियों को अपने संकीर्ण स्वार्थों एवं राजनैतिक मतभेदों से ऊपर उठकर संविधान की सर्वोच्चता व उसकी मूल भावना को स्थापित करने वाले, तथा राष्ट्रीय एकात्मता–अखंडता को पुष्ट करने वाली इस पहल का अभिनंदन करना चाहिए।

मोहन भागवत

सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सुरेश (भय्याजी) जोशी

सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

हिन्दी भाषा

❒ गौरी शंकर वैश्य विनम्र

जाने कितने वर्ष बिताये, घोर निराशा में
आओ! हम सब काम करें, अब हिन्दी भाषा में

घुली हुई संस्कृत की ममता बोली – वाणी में
शिक्षा की उज्ज्वल भविष्य छवि है कल्याणी में

संविधान की शक्ति निहित, जनहित परिभाषा में
भक्तों, संतों, कवियों ने हिन्दी की अलख जगायी

राष्ट्रधर्म की स्वरलहरी में ईश्वर महिमा गायी
कथनी– करनी भेद मिटा दें, मंगल आशा में

हिन्दी सरल, सुबोध, समुन्नत अक्षर न्यारे – न्यारे
देवनागरी लिपि वैज्ञानिक ज्ञान स्वरूप सँवारे

खोल खिड़कियां कम्प्यूटर, देखे प्रत्याशा में
पढ़ें –लिखें, बोलें – बतियायें निज भाषा अपनाएं

अन्य सहेली भाषाओं से कोष समृद्ध बनाएं

जनसंचार माध्यम रत, 'विनम्र' अभिलाषा में
आओ, हम सब काम करें अब, हिन्दी भाषा में

117 आदिलनगर, विकास नगर
लखनऊ – 226022
दूरभाष – 09956087585

एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन सफदरजंग, नई दिल्ली में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या

1 अप्रैल 2019 से 31 जुलाई 2019 तक

भारतीय राज्य / देश	जून 2019 तक	जुलाई 2019	कुल योग 2019–20
बिहार	1171	385	**1556**
उत्तर प्रदेश	954	383	**1337**
मध्य प्रदेश	235	55	**290**
झारखण्ड	153	55	**208**
राजस्थान	138	63	**201**
पश्चिम बंगाल	134	37	**171**
उत्ताराखण्ड	124	59	**183**
हरियाणा	81	18	**99**
नेपाल	103	32	**135**
उड़ीसा	30	12	**42**
जम्मू और कश्मीर	68	26	**94**
छत्तीसगढ़	22	02	**24**
असम	20	12	**32**
गुजरात	14	00	**14**
हिमाचल प्रदेश	05	00	**05**
महाराष्ट्र	10	01	**11**
दिल्ली	16	08	**24**
त्रिपुरा	10	02	**12**
पंजाब	05	06	**11**
मनीपुर	00	00	**00**
अरुणाचल प्रदेश	08	00	**08**
आंध्र प्रदेश	00	00	**00**
चंडीगढ़	00	00	**00**
केरल	08	04	**12**
सिक्किम	02	03	**05**
तेलंगाना	00	00	**00**
बांग्लादेश	00	00	**00**
तमिलनंडु	00	04	**04**
अफ़गानिस्तान	00	00	**00**
कुल	**3310**	**1166**	**4476**

मोबाइल की आदत के कारण

10 प्रतिशत बच्चों की टेढ़ी हो गई आखें 18 प्रतिशत की कमजोर हो गई दृष्टि

ये तथ्य भयानक चौंकाने वाले हैं। बच्चों के लिए मोबाइल फोन की आदत ड्रग्स से भी अधिक खतरनाक है। इससे सिर्फ दिमाग में ही असर नहीं होता बल्कि इससे बच्चों की आँखें भी तेज गति से कमजोर हो रही है। राज्य के विभिन्न आई स्पेशलिस्ट से मिले आंकड़ों और जानकारी के अनुसार उनके पास आने वाले मरीजों में मोबाइल फोन की स्क्रीन के सामने निरंतर देखने के राज्य के 30 फीसदी लोगों की आंखें सूख गई हैं। सर्वाधिक असर 1 से 16 साल के बच्चों पर हो रहा है। करीब 18 प्रतिशत आंखो का विजन तेज गति से कम हो रहा है। निरंतर स्क्रीन के सामने देखने वाले 10 फीसदी बच्चों की आंखों की कीकी टेढ़ी हो गई है। इन मरीजों की आंखों को अलाइनमेंट ऑपरेशन से ठीक किया गया है। 6 साल तक के बच्चों की आंखें सीधी रखने के लिए रिफलेक्सेस विकसित करने की स्थिति में होती है। जिसके कारण मोबाइल का अधिकाधिक उपयोग के कारण आंखें टेढ़ी होने का खतरा बढ़ रहा है। अहमदाबाद सिविल अस्पताल के सीनियर आई स्पेशलिस्ट डॉं हंसा ठक्कर ने बताया कि मोबाइल का अधिकाधिक उपयोग पर लगाम कसना चाहिए। बच्चों की आंखें जरा सी भी टेढ़ी दिखने लगे अथवा पढ़ाई अथवा किसी भी चीज देखने के लिए नजदीकी से इस्तेमाल किया जाता है। तो तुरंत आंखों के विशेषज्ञ डॉक्टरों से जांच कराना चाहिए। मुंबई स्थित लीलावती अस्पताल द्वारा किए गए सर्वे के अनुसार स्मार्ट फोन का उपयोग करने वाले लोग दिन भर में लगभग 150 बार फोन देखते है।

माता–पिता व्यस्त होने के कारण मोबाइल की आदत लगी, टीचर ने जानकारी दी तब पता चला अहमदाबाद के वेजलपुर का 8 साल का विकास राठौर (बदला हुआ नाम) माता–पिता नौकरी करते हैं इसलिए दादाजी के पास रहता है। हर रोज दोपहर से शाम तक उसे तीन से चार घंटे मोबाइल पर गेम्स, कार्टून की आदत पड़ी थी। तीन महीने से उसका विजन में बदल हुआ है। तकलीफ बढ़ने के बाद विकास ने टीचर से बात की थी। शिक्षक ने विकास के पिता को इसकी खबर की थी। चेकअप करने के बाद विकास की आंखों का अलाइनमेंट खत्म होने की की जानकारी पता चली। ऑपरेशन के बाद आंखों को सीधी की गई। इसके बाद विकास के लिए मोबाइल बंद किया गया।

यदि बच्चों को मोबाइल से दूर रखना सम्भव नहीं हो पा रहा है तो मो0 के सम्पर्क में रहने का समय तो कम से कम किया जा सकता है।

बर्थडे के फोटो से पता चला टेढ़ी हो गई आंखें, 6 महीने में असर नहीं हुआ तो सर्जरी करानी होगी

अहमदाबाद के जुहापुरा के 6 साल की समीक्षा भोख (बदला हुआ नाम) दिन भर पिता के टेबलेट पर गेम्स खेलती और स्कूल एक्टिविटीज करती थी। इंजीनियर पिता नाइट शिफ्ट के कारण दिन में आराम करते थे। तेजस्वी समीना के नोटबुक में लिखने में तकलीफ होने के बाद टीचर ने मम्मी से बात की थी। बर्थडे पर लिए गए फोटो में उसकी आंखें टेड़ी हो जाने की स्थिति कन्फर्म हुई। बाद में चश्मा लगाया भी लेकिन कुछ असर नहीं हुआ डॉक्टर कहते हैं कि 6 महीने के भीतर असर नहीं हुआ तो सर्जरी करनी पड़ेगी।

मम्मी ने बाहर खेलने के लिए मना किया तो 5 साल की बच्ची को मोबाइल की आदत पड़ी

बोटाद की 5 साल की हीना मकवाणा (बदला हुआ नाम) को बच्चों के साथ खेलने पर विवाद होता था तो उसकी मम्मी ने बाहर खेलने के लिए मना

किया था। बाद में फोन में गेम्स खेलने वाली हीना को नींद से उठने के बाद दो–दो मम्मी देखने की समस्या हुई। इसकी आंखें भी टेढ़ी हो गई थी। अहमदाबाद के सिविल में जांच करने पर पहले से ही प्लस नम्बर होने का पता चला। ऐसी स्थिति में हर दिन 6–7 घंटे फोन के इस्तेमाल करने से उसकी आंखें टेढ़ी हो गई। अब बाय फोकल चश्मा पहनने के बाद उसकी आंखे सीधी रहती हैं और चश्मा उसे आजीवन पहनना होगा।

अब ड्रग्स के एडिक्शन से भी खतरनाक बन गया हैं मोबाइल फोन का एडिक्शन

अहमदाबाद के सीनियर आई स्पेशलिस्ट और सिविल अस्पताल के आंखों के विभाग के पूर्व संचालक डॉ कामिनी औदीच्य ने बताया कि चार साल में मोबाइल फोन के कारण आंखों की विभिन्न प्रकार की समस्याएं वाले मरीजों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। डॉ कामिनी ने अपने क्लिनिक के इन हाऊस सर्वे के आधार पर बताया कि आई ड्रॉप आंखे सूख जाना की शिकायत 80 से 85 फीसदी मरीज दिन में चार घंटे से अधिक समय मोबाइल फोन, लैपटॉप, कम्प्यूटर, टेबलेट अथवा टीवी स्क्रीन के सामने देखा करते थे। इन मरीजों की उम्र 6 से 20 साल तक की है।

आंखों के विशेषज्ञों ने बताया–भविष्य में बच्चों का सुरक्षा दल में भर्ती होना मुश्किल

सिविल अस्पताल के बच्चों के आंखों के डॉक्टर कल्पित शाह ने बताया कि टेढ़ी आंखों के कारण बच्चों के भविष्य में सुरक्षा दलों में भर्ती होना मुश्किल हो सकता है। ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने के लिए भी परेशानियां हो सकती है। इसलिए बच्चों के लिए मोबाइल का अधिक उपयोग खतरनाक है। अहमदाबाद के आखों के विशेषज्ञ डॉ जगदीश राणा ने बताया कि मोबाइल सहित गैजेट्स का बढ़ता इस्तेमाल के कारण उनके पास हर दिन 15 से 20 बच्चों की आंखों की समस्या के साथ पहुंचती है। साभार–दैनिक भास्कर

❑

व्रत-त्यौहार, सितम्बर 2019

दिनांक	दिन	व्रत–त्यौहार
2	सोमवार	हरितालिका तीज व्रत, वैना. गणेश चतुर्थी व्रत, ढेला चौथ, गणेशोत्सव
3	मंगलवार	ऋषि पंचमी व्रत, रक्षा पंचमी
4	बुधवार	सूर्य 6 व्रत, लोलार्क कुण्ड स्थान पर्व
5	गुरुवार	मुक्ताभरण संतान सप्तमी व्रत, शिक्षक दिवस
6	शुक्रवार	दुर्वाष्टमी, राधाष्टमी, महालक्ष्मी व्रतारंभ, सोरहिया मेला प्रारम्भ
7	शनिवार	महानन्दा नवमी, श्रीचन्द जयंती
8	रविवार	दशावतार व्रत, महारविवार व्रत
9	सोमवार	पद्मा–कर्मा एकादशी व्रत, डोल ग्यारस, जलझूलनी एकादशी
10	मंगलवार	वामन द्वादशी व्रत, वामन प्राकट्योत्सव शुक्र उदय पश्चिम में ताजिया
11	बुधवार	प्रदोष व्रत
12	गुरुवार	अनन्त व्रत, गणपति विसर्जन
13	शुक्रवार	पूर्णिमा व्रत, उमा–महेश्वर व्रत
14	शनिवार	स्नान–दान पूर्णिमा, महालया पितृपक्ष श्राद्ध प्रारम्भ, हिन्दी दिवस
17	मंगलवार	कन्या संक्रान्ति, विश्वकर्मा पूजा
21	शनिवार	श्रीमहालक्ष्मी व्रत
22	रविवार	जीवित्पुत्रिका–जीड़तिया व्रत
23	सोमवार	मातृ–नवमी, मातामह श्राद्ध
25	बुधवार	इन्दिरा एकादशी व्रत
26	गुरुवार	प्रदोष व्रत, मघा श्राद्ध
27	शुक्रवार	मास शिवरात्रि व्रत
28	शनिवार	स्नान–दान–श्राद्ध की अमावस्या, पितृविसर्जन, हस्त के सूर्य
29	रविवार	शारदीय नवरात्र प्रारम्भ अग्रसेन जयन्ती
30	सोमवार	चन्द्रदर्शन, बैंक अर्धलेखा बन्दी

शिक्षक दिवस 5 सितम्बर
"भारतरत्न" पूर्व राष्ट्रपति प्रख्यात शिक्षाविद, दार्शनिक डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयन्ती पर

डॉ0 राधा कृष्णन के छात्र और मित्र उनका जन्मदिन मनाना चाहते थे। अपनी प्रकृति के अनुसार उन्होंने कहा कि मेरा जन्मदिन मनाने के बजाय अच्छा होगा कि 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए।

शिक्षा से हो वैश्विक भाईचारे का विकास

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए इसे सामाजिक, आर्थिक और साँस्कृतिक बदलाव का साधन बताया है। सामाजिक और राष्ट्रीय अखंडता के लिए, उत्पादकता के लिए, शिक्षा का सही ढंग से उपयोग करना चाहिए। शिक्षा का महत्व केवल जानकारी और कुछ गुण प्राप्त करना नहीं, बल्कि यह दूसरों की मदद करने के लिए है। वह चाहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य भगवान के समीप पहुँचने का होना चाहिए। शिक्षा के द्वारा वह लोगों में बराबरी लाने के लिए वर्ग रहित समाज की स्थापना करना चाहते थे। राधाकृष्णन चाहते थे कि शिक्षा को वैश्विक भाईचारे का विकास करना चाहिए।

शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य जगह और समय से परे किसी दूसरी दुनिया, जो कि अदृश्य और अस्पष्ट हो, को देखने में हमारी मदद करना होना चाहिए। शिक्षा ने हमें दूसरा जन्म दिया है, ताकि हमें इस बात का अहसास हो कि हमारे पास पहले क्या है। शिक्षा का मतलब व्यक्ति को स्वतंत्र करना है और हमें चाहिए कि संपूर्ण व्यक्तित्व (शारीरिक, मानसिक, प्राणिक बौद्धिक और आध्यात्मिक) में शिक्षा का समावेश हो। शिक्षा को चाहिए कि व्यक्ति में सामान्य रहन–सहन और ऊँची सोच सम्बन्धी मूल्यों को समाहित करे।

राधाकृष्णन का मानना था कि आध्यात्मिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाय। जो शिक्षा छात्रों में आध्यात्मिक भावनाओं का विकास नहीं कर सकती वह सही नहीं है।

बिना आध्यात्मिक ज्ञान के किसी व्यक्ति का शारीरिक और बौद्धिक विकास नहीं हो सकता। यह मानव सभ्यता के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के संतुलित विकास और उसमें जानकारी एवं विद्वता का बीज बोना है। शिक्षा को छात्रों के दिमाग में लगातार सोचने, सच्चाई का पालन करने और समय–समय पर विरोध दर्ज कराने की क्षमता का विकास करना है।

लागातार 5 बार नोबेल पुरुस्कार के लिए किए गए नामित

जब डॉ0 राधाकृष्णन 1962 में राष्ट्रपति बने तब यह खबर विश्व के महान दार्शनिकों में से एक बट्रेड रसेल को बहुत खुशी हुई और उन्होंने कहा 'यह दर्शनशास्त्र के लिए बड़ा सम्मान है कि डॉ0 राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति बनने जा रहे है। मैं एक दार्शनिक के तौर पर बहुत ही अच्छा महसूस कर रहा हूँ। प्लेटो चाहते थे कि दार्शनिक राजा बने और भारत द्वारा यह दार्शनिक के लिए सच्चा उपहार है।'

डॉ0 राधाकृष्णन को 1933 से 1937 तक लगातार पाँच बार साहित्य में नोबेल पुरुस्कार के लिए नामित किया गया था। 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया।

साभार : 'अमर उजाला' लखनऊ

एकात्म मानववाद

डॉ0 आराधना पाण्डेय
लखनऊ विश्वविद्यालय
विवेक कुमार श्रीवास्तव

त्याग, समर्पण, सेवा, सांगठनिक कुशलता, और उत्कृष्ट राष्ट्रवाद की जीवन्त प्रतिमा, महान कर्मयोगी पं0 दीन दयाल उपाध्याय एक भविष्यदृष्टा विचारक थे, इसमें सन्देह नहीं। पं0 दीनदयाल जी द्वारा प्रदत्त एकात्म मानववादी विचार जहाँ एक ओर भारत के सहस्त्रों वर्षों के समाज–जीवन के अनुभव पर आधारित है तो वहीं उसमें भारत के वर्तमान को वांछित रूपाकार प्रदान कर देश क भविष्य को सुरक्षित व सुसज्जित बनाने की क्षमता भी विद्यमान है।

वस्तुत एकात्म मानववादी चिंतन, 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के चतुर्दिक केन्द्रीभूत है। भारत की संस्कृति 'व्यष्टि' व 'समष्टि' को परस्पर विरोधी व पृथक न मानकर दोनों को परस्पर पूरक मानती है। यह सम्पूर्ण जगत अनेक इकाइयों का अपृथकनीय समुच्चय है। व्यष्टि के हित में समष्टि का हित है और समष्टि के हित में व्यष्टि का हित समाहित है। यही कारण है कि एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज को परस्पर विरोधी व द्वन्द्वात्मक नहीं मानता, जैसा कि मार्क्सवाद और पूंजीवाद जैसी पाश्चात्य विचारधारा स्वीकार करती है। एकात्म मानववादी मत के मूल में ईश्वास्योपनिषद के निम्नांकित विचार को देखा जा सकता है–

ईश्वास्यमिदं सर्व यत्किन्च जगत्यां जगत।
तेन व्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः कस्वस्दि् धनम्।।

अर्थात् – अखिल ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी जड़–चेतन स्वरूप जगत है? यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है। उस ईश्वर को साथ रखते हुये इसे त्यागपूर्वक उपभोग करो। इसमें आसक्त मत होओ (क्योंकि) भोग्य पदार्थ किसका हैं? (अर्थात् किसी का भी नहीं है।)

ईश्वास्य उपनिषद के इस वाक्य में ही एकात्म मानववादी आर्थिक व्यवस्था के बीज भी छुपे हैं। इसके अनुसार आर्थिक पदार्थ व पृथ्वी के संसाधन मानव सहित सभी प्राणियों की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये हैं न कि अनन्त इच्छाओं का शमन करने के लिए। पूंजी भी भण्डारण के लिए नहीं, बल्कि समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए है। इस सारे तथ्य को कबीर के इस दोहे में सहज ही समझा जा सकता है–

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

इस प्रकार एकात्म मानववादी विचार, प्रकृति के अन्धाधुन्ध दोहन का विरोध करता है तथा विकास के जिस प्रारूप (मॉडल) की संस्तुति करता है, उसे समसामयिक भाषा में 'सतत् विकास' कहा जाता है। अतः कह सकते हैं कि 1992 के 'रियो डि जेनेरियों' में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन के पश्चात् ही वर्तमान सभ्य जगत, विकास के जिस प्रारूप के महत्व को समझ सका, उसे 1950 के दशक में ही दीन दयाल जी ने विश्व के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया था। आने वाले समय में परिवर्तन की आहट को उन्होंने पहचान लिया था। वे कहते थे–नये युग का आविर्भाव हो रहा है, उसके लिये नये विचार, नयी नीति और नये नेतृत्व की आवश्यकता है।

वस्तुतः एकात्म मानववाद का जन्म भारतीय समाज के सम्मुख खड़ी चुनौतियों को हल करने के लिये मार्ग की तलाश के अनुक्रम में हुआ। यह विचार कुछ पुस्तकों या किसी एक व्यक्ति के विचारों का सार नहीं है। यह एक व्यावहारिक धरातल से उपजी विचारधारा है जिसकी अन्तर्दृष्टि भारतीय मनीषा से उपजे ऋषियों के विचार से आपूरित है। भारतीय जनसंघ का अधिवेशन 1965 में विजयवाड़ा में सम्पन्न हुआ। वहीं दीन दयाल जी ने एकात्म माननवाद को प्रस्तुत किया। यह एक 'मार्गदर्शक घोषणापत्र' था जिसे अधिवेशन के सभी प्रतिनिधियों ने न केवल स्वीकार किया अपितु इसे विश्व की तमाम राजनैतिक विचारधाराओं जैसे मार्क्सवाद, समाजवाद व पूंजीवाद आदि के विकल्प के रूप में देखा। यह भी कहा गया कि यह कोई वाद नहीं है अपितु एकात्म मानव दर्शन है।

एकात्म मानववादी दर्शन के अन्तर्गत पं0

दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत के प्राचीन जीवन दर्शन पर आधारित समसामयिक व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में मौलिक चिंतन कर दार्शनिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण व्यावहारिक व्याख्याएं प्रस्तुत कीं। इस कथन की परिपुष्टि दीन दयाल जी की पुस्तक 'एकात्म मानववाद' से की जा सकती है। एकात्म मानववादी विचार स्वदेशी पृष्ठभूमि के लिए प्रभावी होने के साथ–साथ वैश्विक परिदृश्य में भी समान्तर रूप से उपयोगी है। वर्ष 1965 में 22,23,24 व 25 अप्रैल को मुम्बई में उन्होंने चार व्याख्यानों में 'एकात्म मानववाद' का विषय व्यवस्था पूर्वक रखा। यह दर्शन पूंजीवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद या व्यक्तिवाद से भिन्न था। एकात्म मानववादी दृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति की न्यूनतम् आवश्यकताओं की पूर्ति, देखभाल और प्रकृति का दायित्व समाज का है। अतः एकात्म मानववाद में मानव जाति की मूलभूत आवश्यकताओं और बनाई गईं विधियों के अनुरूप राजनैतिक कार्रवाई के लिए एक वैकल्पिक सन्दर्भ दिया गया है।

'समाज' शब्द की उत्पत्ति सम् व अज् के मिलन से हुई है अर्थात् जो समानता को जन्म देता है, वह समाज है या जो समानता से उत्पन्न है, वह समाज है। समाज के इस स्वरूप को एकात्म मानववाद में स्थान दिया गया है। दीन दयाल जी ने कहा था– हमारा आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं नैतिक विकास, सबकुछ समाज के साथ जुड़ा है। हिमालय की गुफा में योगाभ्यास करके मुक्ति नहीं मिल सकती। मुक्ति भी व्यक्तिगत नहीं सामाजिक है, समष्टिगत् है। जब समाज मुक्त होगा, ऊँचा उठेगा, तब व्यक्ति भी उठेगा।

इस प्रकार एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज दोनों की ही साथ–साथ उन्नति का समर्थक है तथा यह भारत वर्ष के 'सर्वोदय' की एक वैकल्पिक एवं सम्पूर्ण स्वदेशी प्रणाली प्रस्तुत करता है। ❑

मानसून के मौसम में स्वस्थ रहने के लिए

डॉ0 जितेन्द्र साधवानी

- शुद्ध व ताजा भोजन करें और बाहर अस्वच्छता के माहौल में खाने से बचें। खूब पानी पियें और पौष्टिक संतुलित आहार करें।
- इन्सैक्ट बार्न डिजीजिस जैसे मलेरिया आदि से बचाव के लिये मच्छरों से बचें। इसके लिये मच्छरदानी, मास्क्युटो रिप्पेलेंट आदि का नियमित प्रयोग करें। यथासम्भव फुलस्लीव कपड़े पहनें।
- शरीर को साफ रखें मुख पर रूमाल रख कर छींकें या खाँसें, आँखों को गन्दे हाथों से स्पर्श न करें कंजक्टीवाइटिस, फ्लू आदि इन्फैक्शस रोगों से ग्रस्त रोगी के सम्पर्क से बचें।
- स्वस्थ रहने के लिये साफ सफाई का खास ध्यान रखें। यूँ समझ लीजिये कि दीपावली की तैयारी घरों की साफ सफायी के रूप में अगर जुलाई–अगस्त से ही शुरू कर दें तो हम बीमारियों से भी बच सकते हैं।
- इस बदलते मौसम में बच्चों विशेषकर नवजात शिशुओं का खास ध्यान रखें उन्हें ऐसे कपड़े पहनायें जिनसे पूरा शरीर कवर्ड रहे, पानी उबाल कर पियें, कूलर–एसी के प्रयोग में संयमित रहें।

यू0जी0एफ0–19,20 एवं 21, रामानन्द मार्केट, अहिबरनपुर
सीतापुर रोड, लखनऊ–226020 सम्पर्कः–9415544247

स्वास्थ्य

❑ विजय कुमार सिंघल

स्वस्थ रहना सबसे बड़ा सुख है। कहावत भी है–'पहला सुख निरोगी काया'। कोई आदमी तभी अपने जीवन को पूरा आनन्द उठा सकता है, जब वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहे। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी शारीरिक स्वास्थ्य अनिवार्य है। ऋषियों ने कहा है 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' अर्थात यह शरीर ही धर्म का श्रेष्ठ साधन है। यदि हम धर्म में विश्वास रखते हैं और स्वयं को धार्मिक कहते हैं, तो अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा पहला कर्तव्य है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है, तो जीवन भारस्वरूप हो जाता है।

यजुर्वेद में निरन्तर कर्मरत रहते हुए सौ वर्ष तक जीने का आदेश दिया गया है–'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्छतं समाः' अर्थात् हे मनुष्य। इस संसार में कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर।'

वेदों में ईश्वर से प्रार्थना की गई है–

'पश्येम् शरदः शतम्, जीवेम् शरदः शतम्,
श्रुणुयाम् शरदः शतम्, शरदः
शतम्, अदीनः स्याम् शरदः
शतम्, भूयश्च शरदः शतात्'

अर्थात् 'हम सौ वर्ष तक देखें, जिएं, सुनें, बोलें और आत्मनिर्भर रहें। (ईश्वर की कृपा से) हम सौ वर्ष से अधिक भी वैसे ही रहें।

एक विदेशी विद्वान् डॉ. बेनेडिक्ट जस्ट ने कहा–'उत्तम स्वास्थ्य वह अनमोल रत्न है, जिसका मूल्य तब ज्ञात होता है, जब वह खो जाता है।'

एक शायर के शब्दों में–'कद्रे–सेहत मरीज से पूछो, तन्दुरूस्ती हजार नियामत है।'

प्रश्न उठता है कि स्वास्थ्य क्या है अर्थात् किस व्यक्ति को हम स्वस्थ कह सकते हैं? साधारण रूप से यह माना जाता है कि किसी प्रकार का शारीरिक और मानसिक रोग न होना ही स्वास्थ्य है। यह एक नकारात्मक परिभाषा है और सत्य के निकट भी है, परन्तु पूरी तरह सत्य नहीं। वास्तव में स्वास्थ्य का सीधा संबन्ध क्रियाशीलता से है। कोई रोग हो जाने पर क्रियाशीलता में कमी आती है, इसलिए स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।

प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों में स्वास्थ्य की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी गई है। ऐलोपैथी और होम्योपैथी के चिकित्सक किसी भी प्रकार के रोग के अभाव को ही स्वास्थ्य मानते हैं। वे रोग को या उसके अभाव को माप सकते हैं, परन्तु स्वास्थ्य को मापने का उनके पास कोई पैमाना नहीं है। रोग के अभाव को तो मापने के लिए उन्होंने कुछ पैमाने बना रखे हैं, जैसे हृदय की धड़कन, रक्तचाप, लम्बाई या उम्र के अनुसार वजन, खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा आदि। इनमें से एक भी बात अनुभव द्वारा निर्धारित सीमाओं से कम या अधिक होने पर वे व्यक्ति को रोगी घोषित कर देते हैं और अपने हिसाब से उसकी चिकित्सा भी शुरू कर देते हैं।

पहला सुख निरोगी काया।
दूजा सुख घर होवै माया।।
तीजा सुख कुलवन्ती नारी।
चौथा सुख सुत आज्ञाकारी।।
पंचम सुख भाई बलवीरा।
छठा सुख हो राज में सीरा।
सप्तम सुख स्वदेश में वासा।
अष्टम सुख हों पंडित पासा।।
नौवां सुख हों मित्र घनेरे।
ऐसे नर नहिं जग बहुतेरे।।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ सुश्रुत संहिता में ऋषि ने लिखा है–

समदोषाः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

अर्थात् जिसके तीनों दोष (वात, पित्त एवं कफ) समान हों, जठराग्नि सम (न अधिक तीव्र, न अति मन्द) हो, शरीर को धारण करने वाली सात धातुएं (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य) उचित अनुपात में हों, मूल–मूत्र की क्रियाएं भली प्रकार होती हों और दसों इन्द्रियां (आंख, कान, नाक, त्वचा, रसना, हाथ, पैर, जिव्हा, गुदा और उपस्थ), मन और सबकी स्वामी आत्मा भी प्रसन्न हो, तो ऐसे व्यक्ति को स्वस्थ कहा जाता है।

सौजन्यः स्वास्थ्य रहस्य

सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास

मा. मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में
खाद्य एवं रसद विभाग, उत्तर प्रदेश की नई पहल

प्रदेश के 05 नगरीय क्षेत्रों में गत माह सफल संचालन के बाद इस माह प्रदेश के समस्त नगरीय क्षेत्रों में पोर्टेबिलिटी के माध्यम से राशन दुकान चुनने का

शुभारम्भ

05 अगस्त 2019

आपका राशन आपका अधिकार

प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में भी अक्टूबर, 2019 से पोर्टेबिलिटी लागू किये जाने की योजना।

पोर्टेबिलिटी के मुख्य बिन्दु

राशनकार्ड धारक नगरीय क्षेत्र की किसी भी उचित दर की दुकान से अपनी सुविधानुसार राशन प्राप्त कर सकता है।

पोर्टेबिलिटी की सुविधा प्राप्त करने हेतु राशनकार्ड के किसी एक सदस्य का आधार सीड होना अनिवार्य है।

इस सुविधा के अन्तर्गत राशनकार्ड धारक को समस्त खाद्यान्न एक बार में ही प्राप्त करना होगा।

खाद्य तथा रसद विभाग की अन्य पहल व उपलब्धि

- प्रदेश की समस्त उचित दर दुकानों पर ई–पॉस मशीनें स्थापित।
- तकनीक के अनुप्रयोग द्वारा विगत 03 माह में लगभग रू0 450 करोड़ की खाद्यान्न सब्सिडी की बचत।
- 13.64 करोड़ यूनिट में से 11.89 करोड़ यूनिट में आधार सीड किया जा चुका है।
- एफ0सी0आई0 गोदाम से राज्य खाद्य गोदाम तक खाद्यान्न वितरण में लगे ट्रकों में जी0पी0एस0 सिस्टम स्थापित।
- लगभग 150 राज्य खाद्य गोदामों में 05 मी0टन के इलेक्ट्रॉनिक काँटों की स्थापना, शेष गोदामों पर भी स्थापित करने की प्रक्रिया प्रगति पर।

कार्डधारक सीएम हेल्पलाइन नम्बर **1076** अथवा विभागीय टोल फ्री नम्बर **1800-1800-150** पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं ।

अपने वाहन में रिफ्लेक्टर अवश्य लगवाएं

खाद्य एवं रसद विभाग, उत्तर प्रदेश

RNI No. UPHIN/2005/15853
सेवा संवाद सितम्बर 2019

डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2019-21
प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ

कैलेण्डर वर्ष 2019–21
प्रेषण तिथि– प्रत्येक माह 26 व 30

कुल मुद्रित पृ. की सं. 44

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास

समर्थन मूल्य प्राप्त करना सभी कृषक बन्धुओं का अधिकार है

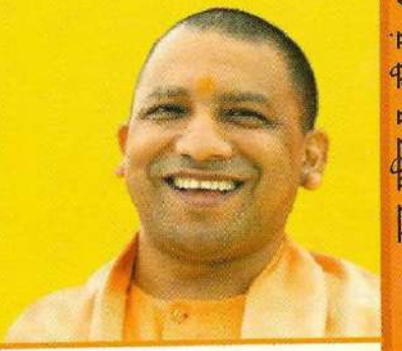

धान खरीद

वर्ष 2019-20

पंजीयन का शुभारम्भ – 25 जुलाई 2019

योजना का लाभ उठाने हेतु किसान अपने बैंक खाते सी०बी०एस० युक्त बैंक में खुलवायें तथा बैंक खाता नम्बर व आई०एफ०एस०सी० कोड भरने में विशेष सावधानी बरतें ।

राज्य सरकार द्वारा मूल्य समर्थन योजना का लाभ किसानों तक पहुँचाने के लिए पहल

पंजीयन करायें समर्थन मूल्य का लाभ उठायें

- कृषक बन्धुओं से सीधे की जायेगी धान खरीद।
- धान खरीद के लिए ऑनलाइन होगा किसानों का पंजीयन।
- किसी भी जनसुविधा केन्द्र, साइबर कैफे या स्वयं से करा सकते हैं पंजीयन।
- किसान पंजीयन का राजस्व विभाग के भूलेख पोर्टल से लिंकेज कराया गया है।
- किसान भाई अपनी खतौनी का खाता संख्या किसान पंजीयन में दर्ज कर अपने कुल रकबे को एवं बोये गये धान के रकबे को अंकित करेंगे।
- विभाग के पोर्टल fcs.up.gov.in पर होगा पंजीयन।
- बिचौलियों से बचने के लिए अवश्य करायें पंजीयन।
- रू. 1815/- प्रति कुं० (कॉमन) एवं रू. 1835/- प्रति कुं० (ग्रेड–ए) मिलेगा समर्थन मूल्य।
- जो कृषक रबी विपणन वर्ष 2019-20 में गेहूँ खरीद हेतु पंजीकरण करा चुके हैं, उन्हें धान विक्रय हेतु पुनः पंजीकरण कराने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु पंजीकृत प्रपत्र में यथावश्यक संशोधन कर या बिना संशोधन के पुनः लॉक करना होगा।
- धान विक्रय के समय पंजीयन प्रपत्र के साथ कम्प्यूटराईज्ड खतौनी, फोटोयुक्त पहचान पत्र, बैंक के पासबुक के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति एवं यथासम्भव आधार कार्ड साथ लायें।

धान क्रय की अवधि

पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं बुन्देलखण्ड में दिनांक 01.10.2019 से 31.01.2020 तक
पूर्वी उत्तर प्रदेश में दिनांक 01.11.2019 से 28.02.2020 तक ।

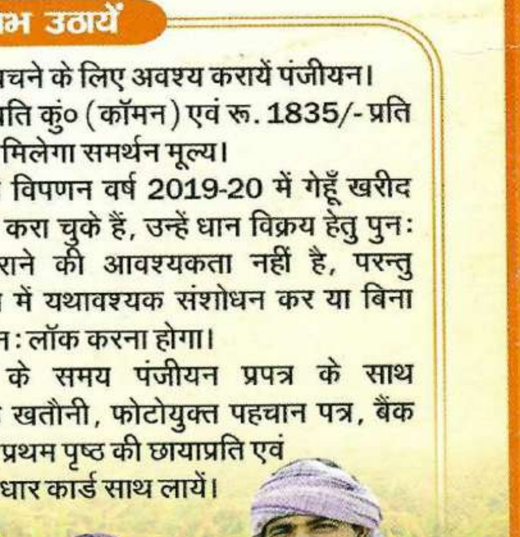

किसी भी सहायता के लिए टोल फ्री नम्बर
1800-1800-150
या सम्बन्धित जनपद के जिला खाद्य विपणन अधिकारी, तहसील के क्षेत्रीय विपणन अधिकारी या ब्लॉक के विपणन निरीक्षक से सम्पर्क कर सकते हैं।

सुरक्षित होगा अपना जीवन, करेंगे गर ट्रैफिक नियमों का पालन

खाद्य एवं रसद विभाग उत्तर प्रदेश

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए बर्फानी इण्टरप्राइजेज, ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनजफ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी